एक मुजाहिद मेमार

मौलाना रहमतुल्लाह कैरानवी

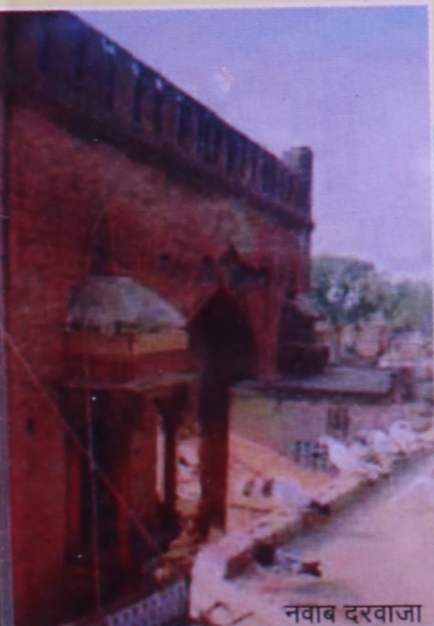
मदरसा सौलतिया-मक्का की एक इमारत

العمارة الكبيرة للمدرسة الصولتية التي انشأها الشيخ محمد سعيد
وانتقلت اليه المدرسة الواقعة حالياً بحارة الباب






कसौटी स्तंभ


नवाब दरवाजा


दरबार दरवाजा (बाबे रहमत)


नवाब तालाब

हज़रत मौलाना मुहम्मद सलीम साहब रह०

एक मुजाहिद मेमार

मौलाना रहमतुल्लाह कैरानवी

मुख़्तसर तज़करा

मुजाहिद–ए–आज़म पायये हरमैन शरीफैन इमामुल मुनाज़रीन
हज़रत अल्लामा मौलाना रहमतुल्लाह साहब कैरानवी रह0
बानीये दारूल उलूम हरम मदरसा सौलतिया मक्का मोअज़्ज़मा

अज़:

हज़रत मौलाना मुहम्मद सलीम साहब रह0

हिन्दी रूपान्तरः

हाजी मौलाना मास्टर शमसुल इस्लाम मज़ाहिरी

एहतिमामः
मौहम्मद उमर कैरानवी
वेब मास्टर वेबसाईटः
kairana.blogspot.in
umarkairanvi@gmail.com

फेहरिस्त

بسم اللہ الرحمٰن الرّحیم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

तमहीद

हिन्दुस्तान में इन्क़लाब 1857 के बाद मुजाहिदीन के एक मुकद्दस काफिले ने तर्के वतन करके काबये इस्लाम का रूख किया। इस कारवाँ का सरगिरोह मिल्लते इस्लामिया का वह मेमार था जिसने मरकजे इस्लाम में पहुँचकर इस्लामी दुनिया के लिये एक अहम मरकजी जरूरत को अपनी खुदा दाद दूर अन्देशी और ईमानी बसीरत से महसूस किया और अरज़े हरम पर आज से अस्सी साल कब्ल एक आला तामीरी मकसद की इब्तदा की। कुदरत की गैबी ताईद इस जलीलुलकद्र शख्सीयत के मुबारक इरादों के साथ थी। इस लिये खुलूस और लिल्लाहियत के वह पाइन्दा आसार काबा के ज़ेरे साया उस्तवार हुये और यह कारनामा एक अजीमुश्शान कारेखैर की हैसियत से उस ऊलुलअज्म, ''मुजाहिद मेमार'' की इस्लामी गैरत, हमियत और अमली कुर्बानियों की यादगार साबित हुआ।

इस्लामी दुनिया के तूल और अर्ज़ में यह जानने वाले कुछ कम नही कि

दारूल उलूम हरम सौलतिया

सरज़मीन हरम पर काबे के जेरसाया आप का एक मजहबी और इल्मी सर·चशमाए फैज है और मक्का मोअज्जमा में ''इस्लामी दुनिया से आने वाले शाईकीने इल्म का एक अस्सी साला मर्कज़ है जो आप के नाम से दुनिया में मशहूर है। मगर बानीये मदरसा, फखरूल उलमा, मुजाहिदे इस्लाम ''पायाए हरमैन शरीफैन'' हजरत मौलाना मुहम्मद रहमतुल्लाह साहब कैरानवी रह0 की जाते ग्रामी गैर मामूली शख्सीयत इल्मी खिदमात, इस्लाम और

मुसलमानों के लिये उन की यादगारे ज़माना कुर्बानियों से मौजूदा दौर का नया तब्क़ा आम तौर पर नावाकिफ़ है। दारूल उलूम हरम सौलतिया की मर्कज़ी अहमियत का हकीकतन ताल्लुक इस के बानी और दाईये अव्वल की तारीख़े हयात से है। माहे रजब सन 1370हि0 के माहनामा 'निदाये हरम' में इस ''जिक्रे कोहन''के मुतअल्लिक जो अहम मवाद शाये हुआ है उसका बेशतर हिस्सा इस ''मजमूए'' में आप के पेशे नज़र है, जिस के मुताले से गुजिश्ता सदी के कुछ तारीखी वाकिआत और हालात की एक झलक आप के सामने आजायेगी। वस्सलाम :-

मुहम्मद सलीम अफिया अन्हु
नाजिम,दारूल उलूम हरम,
मदरसा सौलतिया मक्का मोअज़्ज़मा
10 शव्वाल 1371 हि0, 2 जौलाई 1952 ई0

Madrasa Saulatiya, Post Box No. 114,
Mecca, Saudi Arabia, (K.S.A.)
website: www.alsawlatiyah.com
email: alsawlatiyah@hotmail.com
Fax & Phone No. : 00966--2--5425105
(fax timing, indian 11.a.m 1p.m.)

हिन्दी संस्करणः

यह किताब ''एक मुजाहिद मेमार'' उर्दू जो कई ज़बानों में छप चुकी है का हिन्दी रूपान्तर है।

तैयारी के दौरान शब्द معمار के लिए तीन प्रकार से मेमार, मे'मार, मैमार लिखना हमें ठीक लगा जबकि हिन्दी शब्दकोष में मेअमार लिखा है। फंडर लिखें या फन्डर, मौहम्मद लिखें जोकि रायज है या मुहम्मद जैसी बातें सामने आती रहीं। अरबी, फारसी को भी अहतियातन हिन्दी में लिख दिया है कि अहम बात छूट ना जाये।

हिन्द में अक्सर उर्दू बोलते और हिन्दी में लिखते हैं। उर्दू लिपी पढने वाले कम हुये तो शुद्ध हिन्दी समझने वाले भी कम हैं। ऐसे समय में यह पुस्तक मौजूदा जरूरत के पेशे नज़र तैयार की गयी। फिर मेमार मुजाहिद का अनुवाद योद्धा श्रष्टा लिखने में वह बात कहाँ जो मेमार मुजाहिद में है।

वालिद साहब ने बहुत मेहनत से रूपान्तर किया और हाजी रशीद अहमद साहब (रांघड) के सहयोग से यह किताब तैयार हो सकी।

मौलाना हसीम साहब मौजूदा नाजिम, दारूल उलूम हरम, मदरसा सौलतिया मक्क़ा मोअज़्ज़मा की दिलचस्पी लेने की वजह से किताब छप सकी।

उम्मीद है नतीजा अच्छा रहेगा।

उमर कैरानवी
वेब मास्टर कैराना वेबसाईट
(30 सितम्बर 2005)

Contact: Idgah Road Kairana,(Ph. 01398-268054 sat-sun)
L-21/B, Abul Fazl Enclave, Okhla, New Delhi-25.
Mobile: 98714 16172 -- email:

umarkairanvi@gmail.com
kairana.blogspot.in

हामिदँव व मुसल्लियन

हिन्दुस्तान (कदीम) में इस्लाम की फतह व नुसरत का सद साला जिक्रे खैर मुसलमानाने पाकिस्तान और हिन्द की मज़हबी तारीख का एक अहम बाब

गुजिश्ता सदी का माहे रजब सन 1270 हि0 मुसलमानाने हिन्द व पाकिस्तान की मजहबी तारीख में एक खास अहमियत रखता है जिसमें मुसलमानों को अल्लाहताला ने मगरबी कुव्वत व इकतिदार और ईसाइय्यत के गल्बये तसल्लुत के बावजूद अज़ीमुश्शान फतह और नुसरत अता फरमायी।

जमाना बदल चुका, ख्यालात और रूज्हानात में गै़र मामूली इन्कलाब रूनुमा है। सियासी पेचीदगियाँ और हंगामा आरााई, मआशी मुशकिलात, बाहमी तफरीक और इखतिलाफ के इस दौर में यह फरसूदा बयानी बजाहिर बेवक्त की रागनी है। दिमागी बे एतदाली और बर्क रफतारी के साथ दुनिया एक नामालूम सिम्त की तरफ जा रही है। इस भाग दौड में किसे फुर्सत है कि वह मुड कर पीछे देखे और मौजूदा नस्ल किसी जिक्रे कोहन को सुनने के लिये तैयार हो मगर तारीख का नाम जब तक दुनिया में जिन्दा है और जिन्दा क़ौमें अपनी मजहबी और कौमी तारीख और शान्दार कारनामों को जब तक अपना सरमायाए हयात समझती रहेंगी उस वक़्त तक हर पुरानी याद और पुराना तज़करा, गुजरे हुये हालात और वाकिआत मनस्सए शहूद पर किसी न किसी उनवान से जरूर आते रहेंगे।

दुनिया गहवारहए इन्कलाब है। हिन्दुस्तान कदीम में ईस्ट इन्डिया कम्पनी के इकतिदार के हमदोश मजहबे ईसवी ने भी फरूग हासिल किया और हर मुमकिन सूरत से इस मगलूब मुल्क को मजहबी हैसियत से भी फतह करने की हर मुमकिन कोशिश की गयी। कम्पनी की ताईद और इआनत से मजहब मसीही की तन्ज़ीम और तरक्की अमल में आती रही। मुल्क के तूल और अर्ज में हर जगह इस तन्ज़ीम के आसार कायम किये गये। चर्च मिशन, सोसाइटी, बाईबल सोसाइटी, मिशन फँड, मिशन हस्पताल, मिशन कालिज और मदारिस जाबजा कायम हुये। मजहबी किताबों और अखबारात और रसायल की इशाअत के जर्ये अवाम के रूजहानात और अक़ायद को बदलने की मुहिम जारी की गयी। यह सिर्फ मजहबी जद्दोजहद न थी बल्कि खुद हकूमत (कम्पनी) की मुल्की

सियासत और अमली ताईद भी शरीक थी। मिशनरियों को माली इमदाद दी जाती थी और मुमताज हुक्काम उन की हर मुमकिन सर परस्ती को अपना फर्जे मनसबी समझते थे। हुक्कामे वक़्त का असर व रूसूख कोई मामूली चीज नहीं। इस लिये मसीही तहरीक को यहाँ तक तक़वीयत पहुँच चुकी थी कि जब देहली में सन 1857ई0 में "ओहद–ए–बिशप" कायम करने का सवाल पैदा हुआ तो उस वक्त यह तजवीज भी मद्देनजर थी कि जामा मस्जिद देहली को गृजा बना दिया जाये। इस सूरत हाल का नागुजीर असर था कि हिन्द कदीम में खासतौर पर मुसलमानों को अंग्रेज़ी हकूमत से नफरत पैदा होगई और मसीहीयत की इशाअत में कुव्वत और सियासी इक़तदारे आला से काम लेने की बिना पर मज़हबी मुदाफअत की अहम जरूरत पेश आयी। इस्लाम की सदाक़त और हक्कानियत के खिलाफ जो साजिश की जा रही थी उस पर रब्बानी उलमा कब सब्र और सुकूत कर सकते थे। इस दौर के वह मुजाहिद उलमा जिन्होंने जुर्अत और हिम्मत से काम लेकर हिन्दुस्तान कदीम के मुसलमानों को फितनये मसीहियत की मुसीबत और बला से निजात दिलायी, उन के मुतआल्लिक मौलाना हाली मरहूम फरमाते हैं:

"हिन्दुस्तान में इस्लाम खतरों में घिरा हुआ था। एक तरफ मिशन्री घात में लगे हुये थे। अगरचे क़ेहत के दौरान में उनको दुबला पतला शिकार पेट भराव मिल जाता था मगर वह उस पर क़ाने न थे और हमेशा सेदे फरबह की तलाश में रहते थे। हिन्दुस्तान में सबसे ज्यादा दान्त उनका मुसलमानों पर था इसलिये उनकी मनादियों में, उनके अखबारों में, उनके रिसालों में ज्यादा तर बौछार इस्लाम पर होती थी। इस्लाम की तालीम की तरह तरह से बुराईयाँ जाहिर करते थे। बानिये इस्लाम के अख़्लाक और आदात पर अनवाओ अक्साम की नुक्ताचीनियाँ करते थे। बहुत से मुसलमान कुछ नावाकफियत और बेइल्मी के सबब और अक्सर इफलास के सबब उनके दाम में आ गये। इस खतरे से बिलाशुबा अुलमाऐ इस्लाम जैसे मौलाना आले हसन, मौलाना रहमतुल्लाह साहब मरहूम और डा0 वजीर खाँ वगैरा मुतनब्बेह हुए। उन्होंने मुतअद्दिद किताबें इसाईयों के मुकाबले में लिखीं और उनसे बिलमुशाफह मुनाजरह किये जिससे यकीनन मुसलमानों को बहुत फायदा पहुचाँ। रद्दे नसारा में तालीफ, तस्नीफ तालीफ और पादरियों से मुकाबला और मुनाजिरे का सिलसिला एक जमाअती न सही लेकिन इन्तज़ामी शक्ल में शुरू हो गया था। कुदरती तौर

पर हर जगह मस्जिदें थी। उलमायेकिराम के वह गढ़ थे। इस इन्कलाबी तहरीक के चलने में कोई दुशवारी पैदा नहीं हुयी। रहनुमा की जरूरत थी हजरत मौलाना रहमतुल्लाह कैरानवी से बेहतर कौन साबित हो सकता था। उन्होंने इसकी बुनियाद डाली और इस काम के लिये देहली, आगरा को मरकज़ क़रार दिया। यहाँ भी मौलाना ने तस्नीफ व तालीफ का काम किया इन की जमात में हिन्दुस्तान के इन्तहा पसन्द और हजरत इस्माईल शहीद के फिदाईन थे जिनकी तादाद काफी थी।''

इस तहरीक का जिक्र पादरी फन्डर इस तरह तअल्ली के साथ करता है:

''यहाँ (आगरा) के उलमाए इस्लाम देहली के उलमा के साथ मिलकर गुजिश्ता दो तीन साल से किताब मुकद्दस का और हमारी किताबों और मगरिबी उलमा की तन्कीदी कुतुब और तफासीर का मुतालआ कर रहे थे ताकि वह किताबे मुकद्दस को गलत और बातिल कर सकें। इस का नतीजा यह हुआ कि देहली के आलिम मौलवी रहमतुल्लाह (कैरानवी) ने दो किताबें तस्नीफ की। जनवरी 1854ई0 में जब में यहाँ नहीं था वह आगरा आया था कि अपने अहबाब के साथ इन कुतुब को छपवाने का इन्तजाम करे। मुबाहसा हुआ तकरीबन एक सौ मुसलमान उलमा मौलवी रहमतुल्लाह की मदद के लिये जमा थे और दूसरे रोज इस की दुगनी तादाद थी।''

यह उलमा बिला किसी मुआवजा के रद्दे नसारा में अपना वक्त सर्फ करते रहे और हर सूबे और हर जिले में इनके शागिर्द रद्दे नसारा का फर्ज अदा करते थे। अगर कोई खास मुआमला या मुनाजरा होता था तो मरकज से उलमाएकिराम उन का मुकाबला करने के लिये जाते जिससे पादरियों और अवाम पर खातिर ख्वाह असर होता था। जो उनकी रिपोर्टों में मौजूद है। अगरचे वह मुखालिफाना व मुआनिदाना अन्दाज में है लेकिन वाकिआत के ढंग और ईसाइयों के तर्ज से यह हकीकत वाजेह हो जाती है कि उलमाए किराम हर जिले में उनके मद्दे मुकाबिल थे और उनको चैन से नहीं बैठने नही देते थे चुनाँचे ''पादरी फ्रंच इंचार्ज जिला मुलतान'' की रिपोर्ट में है:

''मुलतान के मुल्ला, सैयद और मखदूम सब इस बात के लिए कोशिश कर रहे थे कि खुदा की रोशनी को दाखिल न होने दें यह दो मशहूर शख्सों यानी मौलवी रहमतुल्लाह और डा0 वजीर

खाँ के जिन्होंने इस्लाम का तरफदार होकर डाक्टर फंडर से मुबाहिसा किया था, दोस्त थे''।

हयाते शिब्ली के दीबाचह में अल्लामा सैयद सुलेमान नदवी साहब लिखते हैं:

''अंग्रेजों के बरसरे अरूज आते ही तीन तरफ से हमलों का आगाज हुआ ईसाई मिशनरियों ने अपनी नई नई सियासी ताकत के बल बूते पर इस्लाम के किले रूईन पर हम्ले शुरू कर दिये। दूसरी तरफ हिन्दुओं में आर्य तहरीक ने अपने साबिक मुसलमान हुक्मरानों से निजात पाकर उन पर हम्ले की जुरअत पाई और सबसे आखिर में यूरोपियन उलूम, फनून और तमद्दुन की जाहिरी चमक दमक मुसलमानों की आँखों को खीरह करने लगी। खुदा ने ईसाईयों के मुकाबले के लिये मौलाना रहमतुल्लाह साहब कैरानवी, डाक्टर वजीर खाँ साहब (आगरा) और उसके बाद मौलाना मुहम्मद क़ासिम साहब नानौतवी, मौलाना रहम अली साहब मंगलोरी, मौलाना इनायत रसूल साहब चिडियाकोटी, मौलाना सय्यद मुहम्मद अली साहब मौंगीरी वगैरा अश्खास पैदा किये। जिन्होंने ईसाइयों के तमाम ऐतराजात के पुरजे उडा दिये। और खुसूसियत के साथ **डाक्टर वजीर खाँ** साहब और मौलाना रहमतुल्लाह साहब कैरानवी का वजूद तो रद्दे ईसाईयत के बाब में ताईदे गेबी से कम नहीं। और कौन बावर कर सकता था कि उस वक्त में पादरी फन्डर के मुकाबले के लिये डाक्टर वजीर खाँ जैसा आदमी पैदा होगा जो ईसाईयों के तमाम असरार का वाकिफ और उनकी मज़हबी तस्नीफात का माहिरे क़ामिल और इबरानी, यूनानी का ऐसा वाक़िफ होगा जो ईसाईयों को खुद उन्हीं की तस्नीफात से मुलज़िम ठहराएगा और मौलाना रहमतुल्लाह साहब के साथ मिलकर इस्लाम की हिफाजत का नाक़ाबिले शकिस्त क़िला दम के दम में खडा कर देगा।

आर्यों के दयानन्द सरस्वती के मुकाबले के लिये खास तौर पर मौलाना मुहम्मद क़ासिम साहब का जहूर भी ताईदे गैबी ही का निशान है। और फिर जिस तरह अकाइदे हक्का की इशाअत और रद्दे बिदआत का अहम काम मौलाना मूहम्मद क़ासिम साहब और मौलाना रशीद अहमद साहब गंगोही और इस जमात के दीगर मुकद्दस अफराद के ज़रिये अन्जाम पाया इसके आसारे बाकिया अब भी हमारी निगाहों के सामने हैं।''

सन 1370 हिजरी के माहे रजब में हजरत मौलाना रहमतुल्लाह साहब रह0 और पादरी फॅडर के दरमियान आगरा में

यादगारे जमाना मुनाजिरा मुनअकिद हुआ। जिसमें हक को फतेह व कामयाबी और बातिल को हजीमत व शकस्त हुई। यह हालात आईन्दा सतूर में आप मुलाहिजा फरमायेंगे, बिलअमूम हजरत मौलाना रहमतुल्लाह साहब को पाकिस्तान और हिन्द की मौजूदा दुनिया "बानीये मदरसा सौलतिया मक्का मुअज़्ज़मा" की हैसियत से जानती है मगर हजरत मौलाना रहमतुल्लाह साहब के मुजाहिदाना कारनामों और मुदाफिअते इस्लाम की अजीमुश्शान खिदमत से वाकिफ नहीं। बाखबर ख़्वास यकीनन वाकिफे हाल हैं। इस्लाम की इस काबिले फखर नुसरत व कामयाबी के सदसाला यादगारी जिक्रे खैर के साथ हजरत मौलाना रहमतुल्लाह साहब रह0 के मुख्तसर हालाते ज़िन्दगी हदियए नाजरीन किये जाते हैं।

0.,0..0

हजरत मौलाना मुहम्मद रहमतुल्लाह साहब रहमतुल्लाह अलैह मौहल्ला दरबार कलां, कस्बा कैराना, ज़िला मुज़फ्फर नगर में माह जमादिउल अव्वल सन 1233 हिजरी में पैदा हुए। बाज कलमी याददाशतों से मालूम होता है कि **कस्बा कैराना** कदीम जमाने में चौहान राजपूतों की राजधानी रह चुका है। जोन्डला और बान्सा जिला करनाल में जो चौहान आबाद थे उनके मूरिस आला राणा हुर्रा की औलाद में से राणा कलसा कैराना का हुकमरान था। जिसकी वजह से कस्बा और निवाह के चौरासी (84) गाँव "कलसियान गूजर" कहलाते हैं। राणा कलसा चौहान राजपूत था मगर कैराना और उसकी निवाह में गूजर कौम आबाद थी इसलिए राणा ने इस कौम मे शादी की। राणा कलसा सुलतान मेहमूद गज़नवी का मआसिर था। सुलतान मेहमूद गजनवी के जमाने में सुलतान की इजाजत से सैयद सालार मसऊद गाजी रह0 मुजाहिदीन की एक बडी तादाद के साथ हिन्दुस्तान पर हमलावर हुए और झिन्झाना होकर कैराना पर हमला किया। शहर के शुमाली और गरबी निवाह में आजतक मजार शुहदा मौजूद हैं। एक कबर चन्द गज तवील शहर के शुमाली जानिब में है जो अरब शुहदा की क़बर बताई जाती है। इसमें बहुत से शुहदा को एक जगह दफन कर दिया गया है। सय्यद सालार मसऊद गाजी रह0 के कैराना पर हमले की यादगार आजतक सालारी कौम कस्बा में मौजूद है। यह अरब नज़ाद कौम कस्बे में शुतरबानी का काम करती है और ऊँट उनका ज़रीया-ए-मआश हैं। कैराना में सबसे पहले यही सालारी कौम आबाद हुई सलातीन तुगलक के जमाने में

शेख अलाउद्दीन अन्सारी इस निवाह के मन्सबे कज़ा पर मुकर्रर हुए। उस वक़्त से अन्सार कैराना में आबाद है। शेरशाह के जमाने में "काकडजई" अफगान आबाद हुए। जिनकी औलाद आजतक मौजूद है।

हजरत मौलाना रहमतुल्लाह साहब रह0 का नसब नामाः

रहमतुल्लाह इब्ने खलीलुल्लाह अल मारूफ ब खलीलुर्रहमान इब्ने हकीम नजीबुल्लाह इब्ने हकीम हबीबुल्ला इब्ने हकीम अब्दुर्रहीम इब्ने हकीम कुतबुद्दीन इब्ने शेख हकीम फुजैल इब्ने हकीम दीवान अब्दुर्रहीम (बिरादर नवाब मुकर्रब खाँ) इब्ने हकीम अब्दुल करीम अलमारूफ ब हकीम बीना अलमुकलब ब "शेखुज्जमाँ" इब्ने हकीम हसन इब्ने अब्दुस्समद इब्ने अबू अली इब्ने मुहम्मद यूसुफ इब्ने अब्दुल कादिर इब्ने कबीरूल औलिया हजरत मख्दूम जलालुद्दीन मुहम्मद रह0 इब्ने मेहमूद इब्ने याकूब इब्ने ईसा इब्ने इस्माईल इब्ने मुहम्मद तकी इब्ने अबीबक्र इब्ने अली नकी इब्ने उसमान इब्ने अब्दुल्लाह इब्ने शहाबुददीन इब्ने शेख अब्दुर्रहमान गाज़रूनी इब्ने अब्दुल अजीज सरखसी इब्ने खालिद इब्ने वलीद इब्ने अब्दुल अजीज इब्ने अब्दुर्रहमान कबीर मदनी इब्ने अब्दुल्ला सानी इब्ने अब्दुल अजीज कबीर इब्ने अब्दुल्ला कबीर इब्ने उमरो इब्ने अमीरूल मोमिनीन जुन्नूरैन सैयदना उसमान इब्ने अफ्फान रजियल्लाहु अन्हु।

हिन्दुस्तान में उस्मानियों का नसब नामा नस्लन बाद नसलिन उस कदीम तारीखी तूमार में महफूज है जो हजरत कबीरूल औलिया मखदूम जलालुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह की दरगाह पानीपत में मौजूद है और जिसकी मुतआद्दिद नकूल बाज उस्मानीयुन्नसब अहले पानीपत के पास हैं। असली तूमार में हर उस्मानी जलाली के नाम का इन्दिराज कमअज़कम बीस जलालियुन्नसब अश्खास की मौजूदगी में होता था। मगर अफसोस है कि आंहकदह बिशक्सत।

हजरत मख्दूम कबीरूल औलिया रहमतुल्लाह अलैह हजरत शाह शर्फुददीन बुअली कलन्दर रहमतुल्ला अलैह से हमेशा इस्तिदआए बेअत किया करते थे और कलन्दर साहब हमेशा यह जवाब देते कि "तुम्हारा मुर्शद आने वाला है अभी सब्र करो, हम बतादेंगें"। जब हजरत ख्वाजा शमसुद्दीन साहब तुर्क रहमतुल्लाह अलैह वारिद पानीपत हुए तो कलन्दर साहब ने मख्दूम साहब से फरमाया के जाओ तुम्हारे पीर आते हैं। उनका इस्तिक़बाल करो। आप घोडे पर सवार शहर से बाहर निकले देखा के एक फकीर

चले आते हैं। सलाम के बाद ख्वााजा साहब ने फरमाया के "मियाँ जवान! जरा अपने घोडे की चाल तो दिखाओ" आप ने बाग उठाई और घोडे को दौडाया। ख्वाजा साहब बहुत खुश हुए और फरमाया कि "ज़हे अस्प व ज़हे सवार" मख्दूम साहब पर एक खास कैफियत तारी हुई और आप घोडे पर से गिरे। ख्वााजा साहब ने सीने से लगाया और जो कुछ देना था दिया और बेअत करके खिलाफत अता फरमायी। हजरत मखदूम साहब रह0 को मुताला कलन्दर साहब रह0 करा चुके थे लेकिन तालीम ख्वाजा शमसुद्दीन साहब तुर्क पानीपती रह0 पर मुनहसिर और मौकूफ थी जो पाया–ए– तकमील को पहुँची। मख्दूम साहब का विसाल पानीपत में 13 रबीउलइव्वल 765 हिजरी को हुआ। पानीपत में मौहल्ला मख्दूम ज़ादगान में आप की औलाद मौजूद और आबाद थी जो इन्क़लाब 1947 ई0 में मुन्तशिर हो गई मगर दरगाह मखदूम साहब और मस्जिद वगैरह बाकी है।

हिन्दुस्तान में उस्मानियों की आमद

सुलतान महमूद गजनवी (वफात 23 रबीउल अव्वल 421 हिजरी मुताबिक 29 अप्रैल 1030ई0) का जिस माहौल में नशवनुमा हुआ उस का असर है कि वह इब्तिदा से अहले इल्म और अरबाबे कमाल का दिलदादह था उस की जिन्दगी पर इस वाकिये का बहुत गेहरा असर है के उसने अपने खुशनुमा बाग में एक दिलकश मकान तामीर किया जिसके जश्न में उस ने दूसरे उमरा*(शासक दल)* और अईयाने ममलकत के साथ अपने बाप अमीर सुबुक्तगीन को भी मदऊ किया बाप ने बाग और मकान के दिलफरेब माहौल को बेहद पसन्द करते हुए अपने होनहार लायक वलीअहद को जो कीमती नसीहत की वह यह थीः

"ऐसे बाग और मकान तो दूसरे अमीर भी बनवा सकते हैं। तुमको वो इमारत तामीर करनी चाहिए कि जिसकी बराबरी कोई दूसरा न कर सके"। महमूद ने पूछा "ऐसी इमारत कौनसी है"। बाप ने जवाब दिया कि "वह अहले इल्म व फजल के दिलों की तामीर है। जो कोई निहाल एहसान उनकी जमीने दिल में लगाए उस का समरह हमेशा पाए।"

इस किस्म की मुश्फिकाना नसाऐह व हिदाययत और उस जमाने के क़दरशनास माहौल में मज़हबी और दीनी तरबियत का नतीजा था कि सुलतान महमूद गजनवी उलमा और अहले कमाल का हमेशा कदरदान रहा। उसको उलूम और फनून से तब्ई लगओ

था। हर काम में किफायत शिआरी मददे नजर रहती मगर हुनर परवरी में उसका फेज आम था। उलमा के लिये वजाइफ और तन्ख़ाहें में मुकर्रर थीं। दारूलउलूम, कुतुब खाने, अजाइब खाने वगैरह उसकी इल्म नवाज़ी का सबूत थे। उस के दरबार में उलमा, उदबा, शुअरा जमा रहते। असाइरी, राजी, अस्दी, तूसी, मनुचहर बलखी, हकीम अन्सुरी, अस्जदी, फरखी, दकीकी अल्लामा अबु रिहान जैसे यगानाऐ असर शुअरा और उलमा उस के अहद में पाये गये।

यही पहला मुसलमान हुकमरान जो सुलतान के लकब से मौसूम हुआ। सुलतान महमूद गजनवी की दीन परवरी उलमा नवाजी से सलतनत के अक्सर व बेशतर ओहदों पर काबिल और लायक दीनी हुक्काम मुकर्रर थे। फौज की तन्ज़ीम का भी खास एहतमाम था। फौजी ओहदों में भी उलमा को इमतियाजी हैसियत हासिल थी। हजरत मौलाना रहमतुल्लाह अलैह के जददे आला शेख अब्दुर्रहमान गाजरूनी सुलतान महमूद गजनवी की फौज में शरई हाकिम थे। यह ओहदा "काजी असकर" के नाम से खुलफाये आले उस्मान रहमतुल्लाह अलैहिम अजमईन के जमाने में भी हमेशा रहा और आखिरी खलीफा सुलतान मुहम्मद रशाद खाँ खामिस मरहूम के जमाने तक इस ओहदे पर मुमताज और मुतदैयन उलमा मुकर्र किये जाते थे। जो फौज के तमाम शरई मुआमलात व मुकदमात का फैसला किया करते। शेख अब्दुर्रहमान गाजरूनी रह० (गाज़रोन या गाज़रान तवाबिआत शीराज में मशहूर मकाम था) सुलतान महमूद गजनवी के लशकर के साथ "काजी असकर" की हैसियत से हिन्दुस्तान आये और जब सुलतान महमूद गजनवी ने सोमनाथ के मन्दिर पर हमला किया तो वह फौज के साथ शरीक जिहाद थे। फतह पानीपत के बाद यहीं मुकीम हुये। पानीपत में जेरे किला मदफून हैं। आप की कब्र पानीपत में एक छोटे से अहाते के अन्दर मशहूर व मारूफ है।

हजरत मौलाना रहमतुल्लाह अलैह हकीम मुहम्मद हसन व हकीम अब्दुर्रहीम अब्नाये हकीम अब्दुल करीम अलमारूफ ब "हकीम बीना" तबीब दरबारे अकबरी के खैरूल खलफ थे। कशमीर से वापसी के बाद लाहौर के करीब चाँदनी रात में अकबर बादशाह हिरनों की लडाई का तमाशा देख रहा था। इत्तेफाकन एक हिरन अपने हरीफ को छोड कर अकबर की तरफ झपटा और उसकी दोनों रानों के बीच में सींग मारा। जख्म हो गया, वरम और तकलीफ बढती गई। इलाज से कोई इफाका ना हुआ तो

अबुलफजल की राय से हकीम बीना को पानीपत से मुआलजे के लिए बुलाया गया। एक माह सात रोज के बाद सेहत हो गयी। शहिन्शाह अकबर ने **हकीम बीना** साहब को "शेखुज्जमाँ" का शाही खिताब अता किया। हकीम मूहम्मद हसन भी अपने वालिद के साथ बादशाह के इलाज में हमा तन मसरूफ खिदमत रहे इसलिए मोरदे अलताफे शाही हुए और कैराना बतौर जागीर अता हुआ फरमान की नकल दर्ज ज़ेल है:

फरमान जलालुदीन मुहम्मद अकबर बादशाह

बजिम्न मुआफी व अताए जागीर कैराना मे इलाका

"खवानीने रफी मिकदार व सलातीन व उमराये बाविकार सुदूर वुजरा किफायत शिआर व उम्माल ममालिके हिन्दुस्तान सानहल्लाहु अन आफातिज्जमाँ चूँ फजायल मआब कमालात इकतिसाब हिकमत शिआर, मसीहा आसार, शेख हसन दर इजाला अमराज व आराज इंसाँन बकदरिल वुसइ वाला मकान बिसाते अहसान व इमतिनान बजहूर रसानीदा व मीरसानद बिना बराँ इनायात व इलतिफाते बेगायात शामिले हाल व काफिले आमाल आँ फजाइल मआब गरदानीदा ।

फरमान वाजिबुल इत्तिबा शर्फ निफाज याफ्त कि मवाजी पान्सद बिगेह जमीन मजरू अज मोजा डूमाखेडी, खान्द्रावली परगनह कैराना मिन आमाल मेयाने दोआब हजरते देहली बइवज मब्लग दह हजार तिन्गाह वादि कि अजाँ मोजा बमूजिब फरमान आलीशान हजतर व दो कल्बा जमीन अज सवाद कस्बा परगनाह मजकूर मुताल्लिक बमशारून इलैह मुफव्वज व मुताल्लिक बमशारून इलैह बूदह बाशद, कि बाज़िबी आँरा साल बसाल कसवे ब हाल अफजूनद व मआश खुद कुनद व इजालाये अमराज जुमरह इनाम बगायत ऐहतमाम बजहूर रसानद व दारोगाहा व उम्माले आँ परगनाह रा मीबायद कि जमीन हाए मजकूर रा बतसररुफे ऊ गुजारन्द व इख्राजात व कुल तकालीफ हबूबी मुजाहमत नसाज़न्द, व मुजाफ व मुसल्लम दानिस्ता बहेच वजह प्रामून न गर्दन्द व हर साल बफरमान मोहताज नदारन्द।---**तहरीर हाजा फी शहर–जीकादा सन 915 हिजरी--**

हकीम मौहम्मद हसन शहजादा सलीम के तबीब खास थे शाहजादे ने " मुक़र्रब खाँ" खिताब दिया। जहाँगीर ने तख्त नशीनी के बाद "मुकर्रबुल खाकान" और "नाइबुस्सुलतान" के खिताबात से नवाब मुकर्रब खाँ को मुअज़्ज़ज किया और पन्ज हजारी का मन्सब

दिया। तख्त नशीनी के कुछ अरसे के बाद जहाँगीर ने नवाब मुकर्रब खाँ को सूबा दक्कन व गुजरात का गवर्नर मुकर्रर किया। 1618 ई0 में शहजादा–ए–शाहजहाँ जब वहाँ भेजे गये तो नवाब मुकर्रब खाँ को सूबा बिहार का गवर्नर मुकर्रर किया। मिस्टर होजज (hodjes) अग्रेंजी सैयाह व मुसव्विर उन की सूबा दारीए बिहार के जमाने में जुलाई 1620ई0 में पटना आया था और नवाब मुकर्रब खाँ का मेहमान रहा। हुसने सलूक से उसके साथ पेश आय। मिस्टर होजज के खतूत से मालूम होता है कि उसपर नवाब मुकर्रब खाँ का रोब बहुत गालिब था और यह खतूत शुक्रिया के जज़्बात से लब्रेज़ नजर आते हैं। जिन में नवाब साहब के बहुत से हालात लिखे गये हैं 1621ई0 में सूबा देहली व आगरा की हकूमत पर सरफराज हुए। शाहजहाँ जब तख्त नशीन हुए तो नवाब मुकर्रब खाँ को मजीद ईनाम और इकराम के साथ मुजाफात कैराना के परगने जागीर में अता हुए। नवाब मुकर्रब खाँ के लडके हकीम रिजकुल्लाह, शाहजहाँ के तबीबे दरबार और हश्त सदी मन्सबदार थे। हजरत औरंगज़ैब आलमगीर रहमतुल्लाह अलैहे ने हकीम रिजकुल्लाह को खिताब ''खानी'' मरहमत फरमाया। 1668 ई0 में हकीम रिजकुल्लाह साहब ने वफात पाई।

दीवान अब्दुर्रहीम और दीवान अब्दुल हकीम नवाब मुकर्रब खाँ के यह दोनों छोटे भाई भी अस्हाबे मनासिब व जाह थे। दीवान अब्दुर्रहीम नवाब मुकर्रब खाँ की गवर्नरी ए दक्कन व गुजरात वगैरह के जमाने में तबीबे दरबार जहाँगीर रहे। उनकी औलाद में आजतक तिब का सिलसिला और खिदमते खल्क का जज़्बा बाकी है। दीवान हकीम अब्दुर्रहीम की औलाद में हर एक अपने वक्त का कामिले फन तबीब था।

हकीम वजीहुद्दीन साहब मुसन्निफ किताब '' मख्जने हिक्मत'' तिब वेदक जो 1196 हिजरी में लिखी गई और हकीम अली अकबर साहब मरहूम बिरादर हजरत मौलाना रहमतुल्लाह साहब रह0 खास तौर पर काबिले जिक्र हैं।

915 हिजरी में फरमाने अकबरी के मुताबिक कैराना व मुजाफाते कैराना नवाब मुकर्रब खाँ को बतौर जागीर अता हुआ तो उस्मानीयुन्नसब जलाली खानदान का यह हिस्सा पानीपत की सकूनत तरक करके कैराना में आबाद हुआ। इस मामूली कस्बे की तोसी व तन्जीम की गई। कस्बे से बाहर नवाब मुकर्रब खाँ और दीवान अब्दुर्रहीम ने अपने महिल्लात, कचहरियां और मुताल्लिकीन रियासत के मकानात वगैरह बनाये जो अब कस्बे की आबादी का

एक जुज़ है। नवाब मुकर्रब खाँ ने कैराना में आमों और दीगर इक्सामों के फलों का बाग लगाया जिसमें गुजरात दक्कन और दूर दस्त मुमालिक से आमों के दरख्त मंगा कर लगाये। एक सौ चालिस बीगह इस बाग का रक्बा था। बाग के वस्त में दो सौ बीस गज लम्बा दो सौ गज चौडा हौज **(तालाब)** बनवाया। हौज के अन्दर माहताबी वगैरह बीस गज मुरब्बा में बनवाई। इस हौज में जमना का पानी एक तरफ से आता और दूसरी तरफ से निकलता था। सर्द और गर्म मुल्कों के दरख्त नसब कराये। सोलवीं जलूस में जहाँगीर खुद कैराना आया। इस बाग की तफसीलात '' तुजके जहाँगीरी'' में मौजूद है। जहाँगीर लिखते हैं:

''मुखलिस व मुहिब्बे खास, यार वफादार मुकर्रब खाँ मुतमन्नी था कि मैं उसके यहाँ आऊँ मैंने उसके घर को कुदूम मैमनत लुजूम से काबिले रश्क बना दिया और इस खैर खवाह क़दीम को बेशकीमत सामान, कीमती जवाहरात तीन लाख रूपये, एक बाग और एक वसी मकान दिया।''

नवाब मकर्रब खाँ के लगाये हुये बाग के आम हस्बे रिवायत ''ताजुल मआसिर'' मुद्दतों तक देहली में मशहूर और मरगूब रहे। वह पुरानी दुनिया अगरचे इन्कलाब 1857ई0 में उजड चुकी मगर यह यादगारे जमाना बाग जिस जमीन पर कायम था वह अब भी **''नौलखा जमीन''** के नाम से मारूफ है। मशहूर है कि इस बाग में छोटे बडे हर किस्म के नौ लाख दरख्त थे। बाग में नवाब मुकर्रब खाँ की बनाई हुयी बारादरी भी मौजूद है जिस जमाने में नवाब मुकर्रब खाँ गुजरात के गवर्नर थे और बन्दरगाह सूरत भी उनके ज़ेरे असर थी उस वक्त उन्होंने अपनी हिकमत अमली से सात जहाज जो मुद्दत से गर्क़ाब थे समुन्दर से निकलवाये। अलावा दीगर अशया के **कसौटी** (संगे सम।क) के चन्द सतून नादिरूल वजूद भी बरामद हुये। इन अशया की इत्तला शहन्शाह जहाँगीर को दी गयी शाही हुकम से यह तमाम सामान नवाब मुकर्रब खाँ को अता हुआ। मजकूराबाला तालाब के वस्त में चबूतरे पर जो बंगला तामीर किया गया था उसमें कसौटी के यह सतून लगाये गये थे जो अब हजरत बू अली शाह कलन्दर रह0 की दरगाह पानीपत में नसब हैं। नवाब मुकर्रब खाँ के इस बाग के मशरिकी जानिब संगीन इमारात का सिलसिला था जो ''दरबार'' के नाम से मारूफ था। यहाँ अदालतें ,फीलखाने और रियासत के दफातिर वगैरह थे। बाग के दूसरी जानिब सकूनती महिल्लात वगेरह थे जो **''नवाब दरवाजा''** के

नाम से अब तक मौसूम है, यह पुरानी इमारतें जमाने के नासाजगार हालात और फिर इन्कलाब सन 1857ई0 की तबाहकारी में बर्बाद हो गईं। दरबार और नवाब दरवाजा के सरबफलक और आलीशान फाटक, नक्कार खानं और कुछ इमारतें पुरानी शानो शोकत की याद को जिन्दा और बाकी रखने के लिये अब तक मौजूद हैं। "अद्दवामु लिल्लाह" नवाब साहब का मजार पानीपत में हजरत बू अली शाह कलन्दर रह0 के अहाते में मौजूद है। कब्र का तावीज असली जहर मोहरा के एक टुकडे का है जिस का वजन 27 मन का ब्यान किया जाता है। दीवान अब्दुर्रहीम के मजार का अफसोस है कि पता न चल सका गालिबन देहली में महरौली के करीब कहीं है।

हजरत मौलाना रहमतुल्लाह साहब रह0 की विलादत बा सआदत इसी "मौहल्ला दरबार" में अपने आबाव अजदाद के इन तारीखी मकानात में हुयी। बारह बरस की उमर में कुरान खत्म करने के साथ दीनियात, फारसी की इब्तदाई किताबें अपने बुजुर्गों से पढीं, उस के बाद देहली बगर्जे तालीम तशरीफ ले गये और मौलाना मुहम्मद हयात साहब के मदरसे में दाखिल हुये। क़्याम भी मदरसे में रहा सन 1250 हि0 में हजरत मौलाना मरहूम के वालिद मौलवी खलीलुल्लाह साहब मरहूम देहली में महाराजा हिन्दुराव बहादुर के मीर मुन्शी मुकर्रर हुये और धीरज पहाडी के करीब उन का क्याम हुआ तो मौलाना अपने वालिद माजिद के पास तशरीफ ले आये। दिन में मदरसा मौलाना मुहम्मद हयात में तालीम हासिल करते और रात को महाराजा को अकबर–नामा सुनाते थे। कुछ अर्से तक हजरत मौलाना मरहूम ने भी महाराजा हिन्दुराव के यहाँ बहैसियत मीर मुंशी काम किया है। तहसीले इल्म का शौक मौलाना को लखनऊ ले गया। चन्द रफका के साथ आप लखनऊ पहुँचे और मुफती सादुल्ला साहब मरहूम से शर्फे तलम्मुज हासिल किया। हजरत मौलाना के असातजा के अस्माये ग्रामी दर्ज ज़ेल हैं:

(1) मौला मुहम्मद हयात साहब रह0

(2) मौलाना मुफ्ती साअदुल्लाह साहब रह0

(3) मौलाना अहमद अली रह0 बिडोली, जिला मुजफ्फर नगर जो आखीर में वजीरे रियासत पटियाला हो गये थे।

(4) आरिफ बिल्लाह मौलाना अब्दुर्रहमान चिश्ती रह0। यह उस्तादे शाहे वक्त थे। तमाम उलूम और फुनून में महारते ताम्मा रखते थे। इन से इस्तफादे के जमाने में हजरत मौलाना के रूफका में मौलाना अब्दुर्रहमान साहब पंजाबी और मौलाना सैयद मुहम्मद

अली साहब भी थे जो अपने वक्त के फाजिल और साहिबे फैज बुजुर्ग माने जाते थे। मौलाना शाह अब्दुर्रहमान चिश्ती और उन के उस्ताद मौलाना मुहम्मद हयात साहब रह0 मरहूम बस्ती हजरत निजामुद्दीन औलिया देहली में मदफून हैं।

(5) मौलवी इमाम बख्श साहबाई साहब

(6) हकीम फैज मुहम्मद साहब। हकीम साहब अपने जमाने के बाकामाल तबीब थे, खानदानी रिवायत के मुताबिक हजरत मौलाना मरहूम ने हकीम साहब से इल्मे तिब में तकमील की।

(7) मुसन्निफ लोकारसम से रियाजी हासिल की

हिन्दुस्तान में हजरत मौलाना के दर्स व तदरीस का जमाना बहुत महदूद है जमाने के नासाजगार हालात और खास तौर पर हिन्दुस्तान में नसारा के बढते हुये इकतदार को रोकने की फिक्र ने आप को इस का मौका न दिया कि इतमिनान के साथ तालीम और तदरीस का फैजे आम जारी करते। तकमीले तालीम और अकबराबाद आगरा के यादगारे जमाना मुनाजरा के दरमयानी अर्से में चन्द साल तक दरबार कैराने की मस्जिद में हजरत मौलाना ने एक दीनी मदरसा कायम किया। इस मदरसे के फैजयाब तलबा में से चन्द खास नाम दर्ज जैल हैं जो हिन्दुस्तान में हजरत मौलाना के खास तलामिजा थे उन में से बाज असहाब ने मक्का मुअज्जमा भी पहुँच कर हजरत मौलाना से शर्फे तलम्मुज हासिल किया।

(1) मौलाना अब्दुस्समी रामपुरी मुसन्निफ हम्दबारी

(2) मौलाना अहमदुद्दीन साहब चकवाली

(3) मौलाना नूर अहमद अमृतसरी

(4) मौलाना शाह अबुल खैर साहब

(5) मौलाना शाह शरफुल हक साहब सिद्दीकी

(6) मोलवी कारी शहाबुद्दीन साहब उसमानी कैरानवी

(7) मौलाना हाफिजुद्दीन साहब दुजान्वी

(8) मौलाना इमाम अली साहब उसमानी कैरानवी

(9) मौलाना अब्दुलवहाब साहब वेलोरी बानी मदरसाये बाकियातुस्सालिहात, मद्रास

(10) मौलाना बदरूल इस्लाम साहब उसमानी कैरानवी मौहतमिम मदरसा हमीदिया कुतुबखाना शाही कुस्तुन्तुनिया

1256 हि0 में हजरत मौलाना मरहूम की शादी अपनी खाला की लडकी से हुयी सन 1257हि0 में फिर महाराजा हिन्दुराव

ने आप को और आप के वालिद माजिद को अपने पास देहली बाडा हिन्दुराव में बुला लिया और हजरत मौलाना को अपना मीर मुन्शी मुकर्रर किया और उनके वालिद माजिद के जिम्मे जायदाद की निगरानी और देख भाल का काम सपुर्द हुआ कुछ अरसे के बाद मौलवी खलीलुल्लाह साहब (उर्फ खलीलुर्रहमान) का इन्तकाल हो गया और बाज खान्गी मजबूरियों की बिना पर हजरत मौलाना मरहूम ने महाराजा हिन्दुराव के यहाँ अपनी जगह पर अपने छोटे भाई मौलवी मुहम्मद जलील साहब को मुलाजिम रख कर अलैहदगी इखतियार की और कैराना पहुँच कर दर्स व तदरीस के साथ रद्दे नसारा की मजहबी खिदमत में मसरूफ हुये और "इजालतुल ओहाम" लिखनी शुरू की

"इजालतुल औहाम" ज़ेरे तरतीब थी कि हजरत मौलाना मरहूम सख्त अलील हुये उठने बैठने और चलने फिरने के काबिल न रहे। इशारे से नमाज अदा होती थी। अकरबा व अइज्जा, तलामिजा और तीमारदार बढती हुयी कमजोरी और शिद्दते मर्ज से परेशान थे। एक रोज नमाज फजर के बाद आप रोने लगे। तीमार दार समझे कि जिन्दगी से मायूसी है। अइज्जा ने तसल्ली व तशफ्फी करनी चाही आपने फरमाया "बखुदा सेहत की कोई अलामत नहीं। लेकिन इन्शाअल्लाह सेहत होगी। रोने की वजह यह है कि ख्वाब में आँ हजरत सल्लल्लाहू अलैहि वसल्ल्म तशरीफ लाये। हजरत सिद्दीके अकबर रजी0 भी साथ हैं। हजरत सिद्दीके अकबर फरमाते हैं ऐ जवान! तेरे लिये रसूलुल्लाह की यह खुशखबरी है कि अगर तकलीफ "इजालतुल औहाम" मर्ज की वजह है तो वही बाइसे शिफा होगी"। मौलाना मरहूम ने फरमाया कि इस खुशखबरी के बाद मुझे कोई रंज और मलाल नहीं बल्कि मसरूर और खुश हूँ और फर्ते मसर्रत से यह आँसू निकल आये। अलहम्दुलिल्लाह कि उसके बाद सहत व आफियत हो गयी और "इजालतुल औहाम" की तरतीब व तालीफ का काम शुरू कर दिया। यह वह जमाना था जब कि ईसाईयों ने हिन्दुस्तान में इस्लाम के खिलाफ जबरदस्त मुहिम जारी कर रखी थी। पादरी फन्डर (Padre C.C.P. Fonder) और उस की जमात ने दिल शिकन तकरीरों का सिलसिला जारी कर रखा था, पादरी फन्डर की किताब "मीजानुलहक" ने अवाम में खौफ व हिरास पैदा कर दिया था। खास तौर पर उलमा-ए-किराम की खामोशी से मिशनरी का जुहला पर काफी असर होने लगा था और पादरी उलमा की खामोशी से नाजायज फायदा उठाने लगे। उलमाये

इस्लाम ने तैयारी शुरू की। मुकाबले के लिये मवाद फराहम किया गया और इस्लाम की हक्कानियत, सदाकत और अल्लाह का नाम बुलन्द करने के लिये रद्दे नसारा की मजहबी जंग के काइदे अव्वल हजरत मौलाना मरहूम ने एलान किया:

''मैंने हिन्दुस्तान के सबसे बडे पादरी जो उलमाये मसीहीयीन में मुमताज हैसियत का मलिक और मीजान का मुसन्निफ था उस से ख्वाहिश जाहिर की कि वह मेरे साथ मजम–ए–आम में मुनाजरा करे ताकि हक वाजेह होजाये और यह मालूम हो जाये कि उलमाये इस्लाम ने इन रसाइल की तरदीद इसलिये नहीं की कि वह आजिज थे बल्कि जवाब देने की जरूरत नहीं समझते थे।'' (मीजानुल हक, पृष्ठ3)

हजरत मौलाना मरहूम अपने शफीक दोस्त मौलवी मुहम्मद अमीरूल्लाह साहब मीर मुख्तार राजा साहब बनारस (जो पादरी फन्डर से भी वाकिफ थे) के साथ पादरी फन्डर के मकान पर गये ताकि मुनाजरा के लिये गुफतुगू करें। पादरी अपने मकान पर न मिले, चुनाँचे 23 मार्च सन 1854ई0 से हजरत मौलाना मरहूम ने पादरी फंडर से खत और किताबत शुरू की। इस मजहबी मरासलत का सिलसिला हजरत मौलाना मरहूम के आखिरी खत मुअर्रिखा 7 अप्रैल सन 1854ई0 पर खत्म हुआ। उनवान मुनाजरा, मकाम और तारीख मुनाजरा तय हुये। तरफैन के इत्तफाक से इब्तदाई मराहिल मुकम्मल होने के बाद पीर के रोज 11रजब सन 1270 हि0 मुताबिक 10 अप्रैल सन 1854 ई0 को अलस्सबाह कटरा अब्दुलमसीह अकबराबाद–आगरा में मुनाजिरे का पहला इजलास मुनअकिद हुआ। हजरत मौलाना रहमतुल्लाह साहब रह0 के साथ डाक्टर मुहम्मद वजीर खाँ मरहूम और पादरी फन्डर के साथ पादरी फरंच थे। मजलिसे मुनाजिरा में मिस्टर स्मिथ हाकिम सदर दीवानी, मिस्टर कृस्चन सेकिन्ड सदर सूबा बोर्ड, मिस्टर विलियम मजिस्ट्रेट इलाकाये फौज, मिस्टर लेडली तर्जुमान हकूमत, पादरी विलियम गलबन, मुफती रियाजुद्दीन साहब, मौलवी फैज अहमद साहब सरिश्तादार सदर बोर्ड, मौलवी हजूर अहमद साहब, मौलवी अमीरूल्लाह साहब मुखतार राजा साहब बनारस, मौलवी कमरूल इस्लाम साहब इमाम जामा मस्जिद आगरा, मुन्शी खादिम अली साहब मोहतमिम मतलउल अख्बार और मुन्शी सिराजुल हक साहब हाजरीन में खास तौर से काबिले जिक्र हैं। अवाम को इस मुनाजिरे से बेहद दिलचस्पी थी। सब से पहले पादरी फन्डर ने

हाजरीन को मुखातिब करते हुये कहाः

"यह जानना जरूरी है कि यह मुनाजिरा क्यूँकर मुनअकिद हुआ। यह मौलाना रहमतुल्लाह की सई व कोशिश और ख्वाहिश का नतीजा है। इस से फायदे की सूरत मेरे नजदीक नजर नहीं आती। मेरी तमन्ना यह है कि दीने ईसवी की हक़ीक़त मुसलमानों के सामने रखूँ। मुबाहिसे के उनवान, नस्ख और तहरीफ उलूहियत हयाते मसीह, तस्लीस व रिसालत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तय हुये हैं"।

पादरी फन्डर के बाद हज़रत मौलाना रहमतुल्लाह साहब खडे हुये और नसख व तहरीफे इन्जील पर फाजिलाना बहस की और खुद ईसाईयों की मतबूआत से नसख और तहरीफ साबित कर दिया। बिल आखिर पादरी फन्डर ने डाक्टर मुहम्मद वजीर खाँ साहब के जवाब में कहा कि सात आठ जगह तहरीफ और तब्दीली हुयी है। मौलवी क़मरूल इस्लाम इमाम जामा मस्जिद आगरा ने मुन्शी खादिम अली खाँ साहब से फर्माया कि "लिखो पादरी साहब आठ जगह तहरीफ होने के इकरारी हैं" पादरी फन्डर ने कहा कि "हाँ बहुत अच्छा है। लिखिये और इस हद तक तहरीफ जरूर हुयी है, लेकिन कुतुबे मुकद्दसा में इस से नुकसान नहीं हुआ है।" हजरत मौलाना मरहूम ने फर्माया "जिस वसीके में एक जगह तहरीफ साबित हो जाये वह काबिले एतबार नहीं रहता। और जब कि सात आठ जगह का ऐतराफ खुद पादरी साहब करते हैं" वक्त काफी हो चुका था पादरी फन्डर के ईमा पर मुनाजरा दूसरे दिन के लिये मुलतवी किया गया।

दूसरे रोज 12 रजब सन 1270 हि0 मुताबिक 11अप्रैल सन 1854ई0 मंगल के दिन सुबह को जलसाए मुनाजिरा फिर मुनअकिद हुआ। जिस में मिस्टर स्मिथ सदर दिवानी, मिस्टर रेड सदर बोर्ड, मिस्टर विलियम मजिस्ट्रेट इलाकाये फौज, पादरी विलियम गलबन, पादरी हारली, मुफती रियाजुद्दीन साहब, मुफती असदुल्लाह साहब सदरूस्सुदूर, मौलवी फैज अहमद साहब सरिश्ता दार सदर बोर्ड, मौलवी हुजूर अहमद साहबं, मौलवी अमीरूल्लाह साहब मुख्तार राजा साहब बनारस, मौलवी कमरूल इस्लाम साहब इमाम जामा मस्जिद आगरा, मौलवी अमजद अली साहब वकील, मौलवी सिराजुल हक साहब, मुन्शी खादिम अली साहब मोहतमिम मतलउल अखबार, मौलवी अमीर अली शाह साहब, मौलवी कमरूद्दीन खाँ साहब मोहतमिम असअदुल अख्बार, मौलवी मुजफ्फर अली शाह साहब जाफरी कादरी, सैयद सफदर अली साहब

शिकोह आबादी, पण्डित जुगल किशोर, मौलवी फैज अहमद बदाँयूनी, मौलवी अमीरूल्लाह साहब वकील, मौलवी मुईनुद्दीन साहब, सैयद बाकिर अली साहब नाजिम महकमा दीवानी, मौलवी करीमुलला खाँ साहब बछडायूनी, सैयद हाफिज हुसैन साहब, हाफिज खुदा बख्श साहब, डाक्टर इलहामुल्ला साहब गोपामवी, मुफती इफहामुल्ला साहब साहिर, काजी बाकिर अली खाँ साहब हमदानी, राजा बलवान सिंह काशी, मौलवी सैयद मदद अली साहब तपिश, मिर्जा जैनुल आबिदीन साहब आबिद, डाक्टर मुकन्दलाल, हकीम फरखन्द अली गोपामवी, सैयद फजल हुसैन साहब, डाक्टर वजीरूद्दीन साहब फरूखाबादी, हकीम जवाहरलाल साहब, गुलाम मुहम्मद खाँ साहब, खलीफा गुलजार अली साहब असीर, गुलाम कुतबुद्दीन खाँ साहब बातिन, मोलवी सिराजुलइस्लाम साहब और दूसरे उलमा और रऊसाये शहर मौजूद थे।

पहले दिन के मुनाजरे की शोहरत आम हो चुकी थी इस लिये दूसरे दिन एक हजार से जियादा हाजरीन की तादाद थी। इस इजलास में भी तहरीफे इन्जील की बकिया बहस जारी रही पादरी साहिबान हर मौके पर गुरेज करते रहे। शकिस्त खुर्दा की बर अफरोतगी तबई अमर है इसलिये पादरी फंरच तुर्श रूई का इजहार करने लगे। यह मुनाजिरा भी बिला इख्तिताम बहस खत्म हुआ मगर पादरी फन्डर ने आम मुनाजिरा और मजमे आम में गुफतगू से पहलू तही करते हुये डाक्टर मुहम्मद वजीर खाँ से मरासलत जारी की। यह खत और किताबत यकुम मई सन 1854 ई0 से शुरू हुयी और 16 अगस्त सन 1854 ई0 को खत्म हुयी पादरी फन्डर लाजवाब हो चुके थे इसलिये डाक्टर मुहम्मद वजीर खाँ साहब अपने पहले खत में पादरी फन्डर को लिखते हैः

''पहले आप मौलाना रहमतुल्लाह की बातों का जवाब दीजिये उसके बाद अगर मबाहसा करना जरूरी है तो अपनी कुतुबे दीनिया से हाथ धो कर और उन को मवाफिक इस्लाह अहले इस्लाम के मन्सूख व मुहर्रफ मान कर तस्लीस के मैदान में कदम रखो जब यह मसअला तय हो जायेगा तो हजरत खातिमुल मुर्सलीन की नबुव्वत के उनवान पर गुफतगू की जायगी''।

हजरत मौलाना मरहूम का दावा था कि जिस मज़हब की तरफ तुम दुनिया को बुला रहे हो वह आसमानी किताब अपनी असली हालत में नहीं है और जिस किताब को तुम मज़हबी किताब कहते हो वह नाकाबिले ऐतबार है पेशवायान मज़हब ईसवी ने

इन्जील में बहुत कुछ तहरीफ कर दी है इस लिये आज दुनिया में दीने ईसवी की बुनियाद खोखली हैं।

मुनाजराये अकबराबाद में यह शर्त खास अहम्मियत रखती थी कि अगर हजरत मौलाना मरहूम पादरी फन्डर के एतराजात का जवाब ना दे सके तो मजहब ईसवी इख्तियार कर लेंगे इसी तरह अगर पादरी फन्डर मौलाना मरहूम के सवालात का जवाब ना दे सके तो वह मुसलमान हो जायेंगे। इस मुनाजिरे में हजरत मौलाना मरहूम के जिम्मे रसूले मकबूल की रिसालत को साबित करना। कलाम पाक का आज तक बिला तहरीफ व तगयीर से बिलकुल महफूज आसमानी किताब होना और इब्ताले तसलीस के सा़थ तहरीफे इन्जील का मुदल्लल सुबूत पेश करना था इस के मुकाबले में पादरी फन्डर को इसबाते तस्लीस के साथ मौजूदा इन्जीलों को वही सहाईफे आसमानी साबित करना था जो हजरत ईसा अलैहिस्सलाम पर नाजिल हुईं और उनमें किसी किसम की तहरीफ नहीं हुयी। हजरत मौलाना मरहूम ने अपनी खुदादाद काबिलियत और ताईदे गेबी से दो रोज के मुनाजिरे में इस अमर को साबित कर दिया कि मौजूदा इन्जील जिस पर ईसाईयों और पादरीयों को नाज है तहरीफ शुदा है जिस का इकरार पादरी फन्डर ने जलसाये आम में कर लिया।

तीसरे दिन मुनाजिरा न हुआ और पादरी फन्डर ने आम मजमे में आने के बजाये अपनी खिफ्फत मिटाने के लिये हजरत मौलाना मरहूम को खत लिखा कि "आप ने मुनाजिरे में जिन इबारतों के हवाले दिये हैं, आपके कहने पर मैंने समझ लिया कि ऐसा ही होगा। लेकिन मैं "हल्लुल इश्काल" भेज रहा हूँ उस में मुलाहिजा कीजिये वह मक़सद नहीं है जो़ जनाब ने ब्यान किया है"!

हजरत मौलाना मरहूम ने इस गुरेज का मुदल्लल और माकूल जवाब दिया। यह खत और किताबत मौलाना मरहूम और पादरी फन्डर के दर्मियान 23 अप्रैल सन 1854 ई0 तक जारी रही। इस मुनाजिरे की पूरी कैफियत "अलबहसुश्शरीफ फी इस्बातिन्नसख व तहरीफ" के नाम से वज़ीरूद्दीन साहब ने मुरत्तब की जो हाफिज अब्दुल्लाह साहब के अहतमाम से सन 1270हि0 में "फखरूल मताबे" शाहजहाँ आबाद देहली में किताब की शक्ल में छपी और वलीअहद मिर्ज़ा फखरूद्दीन इब्ने सिराजुद्दीन बहादुर शाह बादशाह देहली के हुकम से छपकर और उन्हीं के हुक्म से हिन्दुस्तान के अतराफ व अकनाफ मे इशाअत पज़ीर हुयी। यह

किताब सिर्फ मुनाजिरा अकबराबाद आगरा और हजरत मौलाना मरहूम व पादरी फन्डर के आखरी खतूत का मजमुआ है।

मुनाजिरा अकबराबाद को छोटी तकती पर हिस्सा अव्वल मबाहिसा मजहबी और दूसरा हिस्सा "मरासलात मजहबी" के नाम से सैयद अब्दुल्लाह साहब अकबराबादी ने मुन्शी मुहम्मद अमीर साहब के एहतमाम से "मतबए मुन्अमिया" अकबराबाद सन 1271 हि० में छपवाया। पहला हिस्सा फारसी में तकरीरी मुनाजिरा की रोएदाद है। दूसरे हिस्से में डाक्टर मुहम्मद वजीर खाँ साहब और पादरी फन्डर का तहरीरी मुनाजिरा ऊर्दू में है। इस किताब का अरबी तर्जुमा "इजहारूल हक" के हाशिये पर मतबू हैं जो मतबए महमूदिया काहिरा में सन 1317 हि० में तबा हुआ।

हजरत मौलाना मरहूम ने फितनए मसीहीयत के इस्तीसाल और रोकथाम की गर्ज से जो किताबें रद्दे नसारा में **तस्नीफ और तालीफ** कीं वह हस्बे ज़ेल हैं:

1–Izharul Huq (The Declaration of truth) **इजहारूल हक:**
खलीफतुल मुस्लिमीन सुलतान अब्दुल अजीज खाँ और खैरूद्दीन पाशा तूनसी सदर आजम की तहरीक पर पादरी फन्डर से अकबराबाद आगरा में मुनाजिरा की मुफस्सल कैफियत और तमाम मसाइल का निहायत बस्त व शरह के साथ बयान है। 16 रजब सन 1280 हि० कुस्तुन्तुनिया में इस किताब की तालीफ शुरू की और आखिर जिलहिज्जा सन 1280 हि० में खत्म हुयी और 1281 हि० में सब से पहले कुस्तुन्तुनिया में छपी। सदर आजम मौसूफ के हुकम से एक तुर्क आलिम ने अरबी से तुर्की में इस का तर्जुमा किया और "इबराजुल हक" के नाम से मुकम्मल तुर्की तर्जुमा शाय हुआ। नीज यूरोप की मुतअद्दिद जबानों में हकुमत उसमानिया की तरफ से इस के तर्जुमे शाए किये गये पादरियों ने खास अहतमाम व कोशिश से तलफ किया। मिस्र में मुतअद्दिद बार तबा हो चुकी है। मौलवी सलीमुल्लाह साहब मरहूम ने उस का ऊर्दू में तर्जुमा☆ किया जिसके छपने की नौबत न आयी। मौलवी गुलाम मुहम्मद साहब बहांजारांदेरी ने बडी महनत व जानकाही से गुजराती में तर्जुमा किया जो शाए हो चुका है। इजहारूल हक के अंग्रेजी तर्जुमा की इशाअत के बाद "टाईम्स ऑफ लन्दन" ने उस पर तबसरा करते हुये लिखा था कि "लोग अगर इस किताब को पढते रहेंगे तो दुनिया में मजहब ईसवी की तरक्की बन्द हो जायेगी"। नवाब हाजी इस्माईल खाँ साहब मरहूम रईस दतावली जिला

अलीगढ़ ने मक्का मुअज्जमा में हजरत मौलाना मरहूम को टाईम्स का यह तराशा और इजहारूल हक के मुतआल्लिक उस का मजकूरा बाला रिवियू खास तौर पर दिया था। रद्देनसारा में सिर्फ यही एक किताब ऐसी है जिस का जवाब या रद्द आज तक मसीही दुनिया न देसकी। ''ताईदुलहक विरहमतिल्लाह'' इसका तारीखी नाम है। ''इजहारूल हक'' एक मुकदमा और छः अबवाब पर मुशतमिल है। अबवाब की तफसील जैल में मुलाहिजा होः

1. बाब अव्वल, बयान व तफसील कुतुब एहदे कदीम व जदीद
2. बाब दवुम,बयान व तफसील इसबात तहरीफ इन्जील
3. बाब सेवुम, बयान व तफसील इसबात नसख इन्जील
4. बाब चहारूम,बयान व तफसील इब्ताले तस्लीस
5. बाब पंजुम, कुरआन का कलामुल्लाह होना।
6. बाब शशुम, इसबाते नबुव्वत मुहम्मद स0 और पादरियों के ऐतराजात की तरदीद।

2–Izalatul Auham (Removal of Misconceptions) **इजालतुल औहामः** यह किताब 564 सफहात पर सैयदुल मताबे कुचा बुलाकी बेगम देहली में सैयद कव्वामुद्दीन साहब के जेरे एहतमाम फारसी में सन 1269 हि0 में बडी तकती पर छपी। रद्दे–नसारा के अकसर मबाहिस का मुसकित जवाब है। इस में पादरी फन्डर के ''मीजानुल हक'' में ऐतराजात के दन्दान शिकन जवाबात भी हैं।

3–Izalatush Shukook (Removal of Doubts) **इजालतुश्शुकूकः** यह किताब ईसाईयों के उन्तालीस सवालो का जवाब है। सन 1268हि0 मुताबिक 1854 ई0 में तस्नीफ हुयी और दो जिलदों में शाए हुयी। इसमें नबुव्वत मुहम्मदी और तहरीफे बाईबिल के मुदल्लल सुबूत हैं। दोनों जिलदें 1116 सफहात पर मुशतमिल हैं इस किताब की सबबे तालीफ के मुताल्लिक हजरत मौलाना मरहूम दीबाचे में तहरीर फरमाते हैं:

''सन 1269 हि0 दो अमर बाइस हुये कि इन (पादरियों के सवालात) का जवाब लिखूँ एक यह कि बाज ईसाईयों ने इन सवालों में इस्लाह देकर और छः सवाल और बढाकर उन को जनाब मुस्तताब मिर्जा मुहम्मद फखरूद्दीन वली अहद बहादुर दामा इजलालुहू की खिदमत बा बरकत में भेजा और जनाब मुफख्खम अलैह ने मुझसे दरखास्त की कि उन का जवाब लिखूँ और उन का अमर मानना पडा''।

हजरत मौलाना मरहूम के शागिर्द रशीद शमसुल उलमा फाजिल जलील मौलाना अब्दुल वहाब साहब मरहूम वेलोरी बानीये

मदरसा बाकियातुस्सलिहात, मद्रास ने अपने एहतमाम और सर्फ से मद्रास में पहली जिल्द छपवाई थी। दुसरी जिल्द मौलाना मौसूफ के खल्फ अरशद मौलाना अबुल फजल जियाउद्दीन मुहम्मद साहब मरहूम मोहतमिम मदरसा ए मजकूर ने अपनी निगरानी में तबा करायी। जिल्द अव्वल और जिल्द दवुम की तस'ही (संशोधन) वगेरह खुद शमसुल उलमा मौलाना अब्दुल वहाब साहब ने माहे शाबान सन 1288 हि0 में मुकम्मल फरमाई जिसके मुताबिक दोनों जिल्दे तबा हुई।

4– Ijaz-i Eeswi (The Miracle of Jesus) **एजाज़े ईसवी**: इस किताब में हजरत मौलाना मरहूम ने कामिल तौर पर बाइबिल का गैर मोतबर और मुहर्रफ होना साबित किया है। यह किताब सन 1269हि0 में आगरा में लिखी गयी। पहली बार आगरा में और दूसरी मतर्बा मतबए रिजवी देहली में तबा हुई। दो सौ सफहात पर मुशतमिल है।

5– Ahsanul Ahadis fi Ibtalit Tashlish. (Arguments proving the doctrine of trinity to be false) **अहसनुल अहादीस फी इब्तालित्तस्लीस** : दलायल अकलियान नकलिया से तस्लीस को बातिल किया है सन 1271 हि0 में तस्नीफ हुयी और मतबए रिजवी देहली में सन 1292 हि0 में छपी।

6–Burooq-e-Lamea (The Bright Flashes) **बुरूके लामिआ**: रसूले मकबूल की रिसालत का मुदल्लल इस्बात और खातिमुलमुर्सलीन पर खत्मे रिसालत को साबित किया है।(गैर मतबूआ)

7– Al-bahs-us-Sharif fi Isbat un Naskh, wat Tahrif (A treatise on the abrogation and corruption Of the Bfuk)

अलबहसुशरीफ फी इस्बातिन्नस्खे वत्तहरीफ

सन 1270हि0 में लिखी गयी। तहरीफ इन्जील पर मुहक़िक़ाना बहस है। 56 सफहात और मुतवास्सित तकती पर फख्रूल मताबे देहली में छपी है।

8–Mauddil Ewajajul Mizan **मुअदिल अऊजाजुल मीजान**: यह किताब मीजानुल हक– मुअल्लिफा पादरी फंडर का जवाब है रिसाला नूर अफशाँ नम्बर 30 जिल्द 12 मतबूआ 24 जौलाई सन 1884 ई0 में पादरी सफदर अली साहब के मजमून से मालूम होता है कि इस किताब का कलमी नुस्खा उन के पास है।

9–**तकलीबुल मताइन**: Taqleebul Mala'in (The Reversal of Objections) यह किताब "तहकीके दीने हक" मुअल्लिफा पादरी

लासमंद का रद्द और जवाब है।(गैर मतबूआ)

10–Mayarut Tahqeeq (The standard of Research)**मैयारूल तहक़ीक** : किताब "तहकीकुलईमान" मुअल्लिफा पादरी सफदर अली का दन्दान शिकन जवाब है।

इन्कलाब सन 1857ई0

गर्दिशे जमाना से सलतनते मुगलिया का टिमटिमाता हुआ चिराग गुल हुआ। इन्कलाब सन 1857ई0 ने हिन्दुस्तान में अंग्रेजो के इकतदार को तकमील तक तहुँचाया और कम्पनी का मकसदे तिजारत पूरा हुआ। सियासी दुनिया में किसी क़वी और गालिब ने आज तक कमजोर और जेरेदस्त के साथ रहम और शफक़्क़त का बरताव नहीं किया। रोना सिर्फ अपनी गफलत और बदइकबाली का है। इस जमाने के उलमा की एक अमली जमाअत अपने फरज से गाफिल ना थी। एलाये कलिमतुल्लाह और अहयाऐ सुन्नत के मजहबी जज़्बा और दीनी फरीजे की अदायगी के लिये ये जमाअत मैदान में आयी, अपनी बिसात और हिम्मत के मुताबिक खिदमत का हक अदा किया।

बिना करदन्द खुश रस्मे बखून व खाक गलतीदन
खुदा रहमत कुनद ई आशिक़ाने पाक तीनत रा

परगना कैराना व शामली में जमींदारा शयूख़ और मुसलमान गुजरों के हाथ में था जिन में दीनदारी के साथ जोश भी मोजूद था। थानाभवन और कैराना का एक महाज कायम किया गया। मुजाहिदीन की जमाअत मुदाफअत और मुकाबला करती रही। शामली की तहसील पर हमला किया गया परगना के चारों तरफ इस मुजाहिदीना तहरीक का असर आम हो चुका था। थानाभवन में हजरत हाजी इमदादुल्लाह साहब और मौलवी अब्दुल हकीम साहब थानवी मे् रफका और निवाहे कैराना में हजरत मौलाना मरहूम गोरह फौज का मुकाबला कर रहे थे। मुजाहिदीन कैराना में चूँकि मुसलमान गुजर ज्यादा थे इसलिए इन की कियादत चौधरी अजीमुद्दीन हजरत मौलाना मरहूम के साथ कर रहे थे। (इन्कलाब के बाद चौधरी अजीमुद्दीन मक्क़ा मुअज्ज़मा हजरत मौलाना मरहूम के पास आ गये थे और यही इन का इन्तकाल हुआ) उस ज़माने में असर की नमाज के बाद मुजाहिदीन की तनजीम व तरबियत के लिये कैराना की जामा मस्जिद की सीढ़ियों पर नक्कारे की आवाज पर लोगों को जमा किया जाता और ऐलान होता था:

मुल्क खुदा का और हुक्म मौलवी रहमतुलाह का

इस जुमले के सिवा और जो कुछ कहना होता था वह

अवाम को सुनाया जाता। इस पुरानी आवाज को सुनने वालों में से अब कोई नहीं रहा मगर जिन्होंने अपने बुजुर्गों से इस की सदाये बाजगश्त सुनी है वह अब तक मौजूद हैं। कैराना के महाज पर बजाहिर शकस्त का इमकान न था। मगर बाज अब्नाये वतन की जमाना साजी और मुखबिरों की साजिश ने हालात का रूख बदल दिया। कैराना में गोरा फौज और तोपखाना दाखिल हुआ। मौहल्ला दरबार के दरवाजे के सामने तोप खाना नसब किया गया और गोरा फौज ने मौहल्ला दरबार का महासरा किया। हर घर की तलाशी ली गयी। औरतों और बच्चों और हर शख्स को फरदन फरदन दरबार से बाहर निकाला गया। इसलिये कि मुखबिर ने इत्तला दी थी की मौलाना दरबार में रूपोश हैं। कैराना के करीब "पन्जीठ" मुसलमान गुजरों का एक गाँव है जहाँ हजरत मौलाना मरहूम अपनी बाकी माँदा जमात के साथ पहुँचे। खुद "पन्जीठ" के लोग भी मुजाहिदीन में शरीक थे। इसी दौरान में गोरा फोज के एक घोडे सवार दस्ते ने पन्जीठ का रूख किया। कैराना और कुर्बवजवार के तमाम हालात की इत्तला हजरत मौलाना मरहूम को मिलती रहती थी। पन्जीठ के मुखिया को जब फौज का आना मालूम हुआ तो उस ने जमात को मुन्तशिर कर दिया और हजरत मौलाना मरहूम से ख्वाहिश की कि खुरपा लेकर खेत में घास काटने चले जायें। गौरा फौज उसी खेत की पगडण्डी से गुजरी। हजरत मौलाना मरहूम फरमाया करते थे कि "मैं घास काट रहा था और घोडों की टापों से जो कंकरियाँ उडती थी वह मेरे जिस्म पर लग रही थीं और में उन को अपने पास से गुजरता हुआ देख रहा था"।

गौरा फौज ने गाँव का मुहासरा किया। मुखिया को गिरफ्तार कर लिया गया। पूरे गाँव की तलाशी ली गयी मगर हजरत मौलाना मरहूम का पता ना चला मजबूरन यह फौजी दस्ता कैराना वापिस हुआ। हालात पर काबू पालिया गया और हजरत मौलाना मरहूम के खिलाफ फौजदारी मुकदमा चलाया गया। और वारन्ट जारी हुआ आप को मफरूर व बागी करार देकर गिरफ्तारी के लिये एक हजार रूपये के इनाम का ऐलान हुआ। हजरत मौलाना मरहूम अपना नाम "मसलहुद्दीन" बदलकर पैदल देहली रवाना हुये। आपके लिये यह सख्त आजमाईश का वक्त था। ईमानी अज्म, हिम्मत और सब्र और इस्तकलाल के साथ जयपुर और जोधपुर के मुहीब रेगिस्तानी जंगलों और खतरनाक रास्तों को

पा प्यादा तय करते हुये सूरत पहुँचे। बन्दरगाह सूरत से भी जहाज का सफर आसान ना था। बादबानी जहाज चला करते थे। साल भर में सिर्फ एक जहाज हवा की मवाफकत के जमाने में सूरत से रवाना होता और इसी तरह जद्दे से आया करता था। एक खत का महसूल चार रूपये था। जो लोग हिजरत के इरादे से तर्के वतन करते वह साथ ही दुन्यावी ताल्लुकात और बाहमी अलाईक को जिन्दगी ही में खत्म कर दिया करते थे।

हजरत मौलाना मरहूम की रवान्गी और फौजदारी मुकदमे के बाद आप की और आपके खानदान की जायदाद जब्त होकर नीलाम हुयी। खास तौर पर पानीपत में मुखबिर "कमालुद्दीन" की शनाख्त पर जो जायदाद कुर्क करके नीलाम की गयी उसका मुख्तसर बयान दर्ज ज़ेल है। नीलाम जायदाद का फैसला डिप्टी कमिशनर करनाल ने 30 जनवरी 1862 ई0 में किया।

1– सराय खजूर इसकी कीमत सरकारी तौर पर डिप्टी कमिशनर करनाल के कागजात में पाँच सौ रूपया है।
2– सराय चौढे 3– सराय शेख फज्ल इलाही
4– सराय कस्साबान
5– सराय लोह आबाद 6– सराय मालियान

यह सब सरायें और वसी कतआत जमीन और मकानात एक हजार चार सौ बीस रूपये में नीलाम हुईं। जिनकी लाखों रूपये कीमत थी। मजरूआ इलाके और जराअती जमीनें इस सकनाई जायदाद के अलावा हैं जो बहक्के सरकार जब्त हुईं। मज़कूराबाला सराये जिस कीमत पर नीलाम हुई वह भी मुलाहिजा होः

सराये खजूर 42 रूपये, सराये लोहाबाद 15 रूपये, सराये चौढे 56 रूपये, सराये कस्साबान 14 रूपये।

कागजात जायदाद नीलाम शुदा में इन्डकस मशमूला का यह उनवान है :

"इन्डकस मशमूला मिस्ल फौजदारी मुकदमये अर्जी कमालुद्दीन साकिन कैराना हाल पानीपत मौलवी रहमतुल्लाह बागी"।

रहमतुल्लाह बेतुल्लाह में

तवील सफर के आलम और मसाइब को बरदाशत करता हुआ यह सरवकफ मुजाहिदे इस्लाम, मर्कजे इस्लाम में पहुँचा ताकि काबे के जेरे साया खिदमते इस्लाम का कोई पहलू निकाल सके। हिन्दुस्तान में इस अमली जमात के अकसर अफराद ने मक्का

मुअज्ज़मा का रूख किया। हजरत हाजी इमदादुल्लाह साहब मरहूम, हजरत मौलाना रहमतुल्लाह से कुछ पहले मक्का मुअज़्ज़मा पहुँच चुके थे और रबात दाऊदिया में (जो कि बाबुल उमरा से मुत्तसिल है) के एक हुजरे में मुकीम थे। सुबह सादिक के करीब हजरत मौलाना मरहूम मक्का मुअज़्ज़मा पहुँचे, मताफ़ में हजरत हाजी साहब से मुलाकात हुई, तवाफे कुदूम और सई में हजरत हाजी साहब मरहूम साथ रहे उस के बाद दोनों रबात दाऊदिया में आये। उस जामने में सैयद अहमद दहलान ''शेखुल उलमा'' थे और मस्जिदे हरम में आप का हलकाए दर्स मरजए आम था। शरीफ अब्दुल्लाह इब्ने ओन इब्ने मुहम्मद ''अमीरे मक्का'' थे। सुलतान अब्दुल अजीज खाँ का दौरे खिलाफत था। हजरत मौलाना मरहूम ने हालात का जायज़ा लिया और उलमाए मस्जिदे हरम से ताअल्लुकात पैदा हुये। सैयद अहमद दहलान के दर्स को अकसर सुनने का मौक़ा मिलता। मौसूफ चूँकि शाफीयुल मज़हब थे इसलिये एक रोज दौराने तक़रीर में किसी मसअले पर बहस करते हुये अपने मज़हब की तरजीह के साथ अहनाफ के दलाईल को कमजोर साबित करने की कौशिश की। दर्स खत्म होने के बाद हजरत मौलाना मरहूम ने सैयद अहम दहलान से पहली मर्तबा मुलाकात की और इस मसअले के मुतअल्लिक एक तालिबइल्म की हैसियत से अपनी तशफ्फी चाही। थोडी देर क़े सवाल व जवाब से और इल्मी गुफतगू से सैयद अहमद दहलान को इसका अन्दाजा हो गया कि यह शख्स तालिबइल्म नहीं। हक़ीक़त हाल दर्याफ्त की, हजरत मौलाना मरहूम ने इख्तसार के साथ कुछ हालात ब्यान किये। दूसरे दिन अपने घर में दावत के लिये हजरत मौलाना मरहूम से फरमाया। आप अपने रफीक अजीज हजरत हाजी साहब मरहूम के साथ सैयद साहब के दौलत खाने पर तशरीफ ले गये। इस मजलिस में हजरत मौलाना मरहूम ने इन्कलाब सन 1857ई0 के तमाम हालात और खास तौर पर नसारा की मजहबी कोशिशों और रद्दे नसारा में मुसलमानों की अजीमुश्शान कामयाबी की तफसील बयान की। जिससे बेहद मसरर्त का इजहार फरमाया और हजरत मौलाना मरहूम से देर तक बगलगीर हुये। इसी मजलिस में हजरत मौलाना मरहूम को मस्जिद हरम में दर्स की बाकायदा इजाजत दी और उलमाए मस्जिद हरम के दफतर में आप का नाम दर्ज किया।

कुस्तुन्तुनिया से सुलतान अब्दुल अजीज खाँ मरहूम का

फरमान अमीरे मक्का शरीफ अब्दुल्लाह पाशा के नाम आया कि "हज के जमाने में हिन्दुस्तान से जो उलमा व बाखबर असहाब आये हैं उनसे पादरी फन्डर के मुनाजिरे और इन्कलाब सन 57ई0 के खास हालात मालूम करके बाबे खिलाफत को मुत्तले किया जाये"। अमीर मक्का ने शेखुल उलमा सैयद अहमद दहलान से इस फरमान का तजकिरा किया। मौसूफ ने फरमाया कि "जिस आलिम से यह मुनाजिरा हुआ है वह खुद यहाँ मौजूद है"। अमीरे मक्का के हुक्म से दूसरे दिन हजरत मौलाना रह0 शेखुल उलमा के साथ अमीरे मक्का की खिदमत में हाजिर हुये। सुलतान को हालात से मुत्तेले किया गया और कुस्तुन्तुनिया से सुलतान की तलबी और हुकुम पर अमीरे मक्का ने हजरत मौलाना मरहूम को सन 1280हि0 मुताबिक 1864ई0 में शाही मेहमान की हैसियत से रवाना किया।

इन्कलाब 57ई0 के बाद पादरी फन्डर जर्मनी स्विटजरलैण्ड और इंगलिस्तान में रहा, चर्च मशीनरी सोसाईटी लन्दन ने इसको कुस्तुन्तुनिया भेजा ताके वहाँ काम करे। पादरी फन्डर अपनी शर अन्गेज तबीयत से मजबूर था। दौलत उस्मानिया में फन्डर और उसकी जमात में यह मशहूर करा दिया था कि हिन्दुस्तान में ईसाईयत की फतेह और इस्लाम को शकिस्त हो चुकी है और उलमाए इस्लाम ला जवाब हो चुके हैं। हिन्दुस्तान के मुसलमान मसीहीयत को कुबूल कर रहे हैं। इस खबर से भी सुल्तान बहुत मुतशवविश थे। हजरत मौलाना मरहूम की आमदे कुस्तुनतुनिया की खबर सुनकर पादरी फन्डर कुस्तुन्तुनिया से रूपोश हुआ। सुलतान ने एक मजलिस–ए–उलमा मुनअकिद की जिस में वुजराए सलतनत के अलावा अहले इल्म अस्हाब को मदऊ किया और हजरत मौलाना मरहूम से हिन्दुस्तान में मजहबे ईसवी की शकिस्त और इन्कलाब 57ई0 के हालात सुने। दौलते उस्मानिया में इस फितने व फसाद को रोकने के लिये हकुमत ने मसीही मुबल्लिगीन को कैद किया। उनकी किताबों पर पाबन्दिया लगाई गईं और सख्त अहकामात जारी किये गयें।

अकसर नमाजे इशा के बाद सुलतान बकमाले इलतफात शाहाना हजरत मौलाना मरहूम को शर्फे बारयाबी अता फरमाते थे। उस वक्त खैरूदीन पाशातोन्सी सदरे आजम और शेखुलइस्लाम वगैरह भी शरीक मजलिस होते। सुलतान अब्दुलअजीज खाँ मरहूम ने हजरत मौलाना मरहूम की जलीलुलकदर दीनी मुजाहिदाना खिदमात की कदरअफजाई फरमाई। जरींन खिलअत के साथ

तमगये मजीदी दरजा दोयम और ग्राँकदर वजीफए माहाना से सरफराज फरमाया।

सुलतान की ख्वाहिश और खैरूद्दीन पाशा की तहरीक पर माहे रजब 1280 हिजरी में हजरत मौलाना मरहूम ने "इजहारूलहक" लिखनी शुरू की, और आखिर जिलहिज्जा सन मजकूर में छः माह के अन्दर तैयार करके सुल्तान की खिदमत में पैश की। खैरूद्दीन पाशा ने हजरत मौलाना मरहूम से फरमाया कि अमीरूल मोमिनीन की खवाहिश पर आप ने ये किताब लिखी मगर उसके मुकद्दमे में आप ने मक्क़ा मुअज़्ज़मा के शेखुलउलमा का जिक्र किया है हालाँकि अमीरूल मोमिनीन का नाम आना चाहिये था। हजरत मौलाना मरहूम ने फरमाया कि

"इस खालिस मजहबी खिदमत में किसी दुनियावी गरज़ और मक्सद का कोई शाइबा न आना चाहिये। इसके अलावा मक्का मुअज्जिमा में खुद शेखुलउलमा मुझ से इन हालात के कलमबन्द करने की खाहिश कर चुके थे और इब्तिदायी मवाद की तरतीब का काम भी शुरू कर दिया था। दूसरी वजह यह है कि इस किताब की तालीफ का असल सबब शेखुलउलमा हैं। किसी वजह से अगर वह मुझे अमीरे मक्क़ा तक न पहुंचाते तो मेरी रसाई यहां तक न होती और इस खिदमत का मौक़ा न मिलता।"

मौलाना की इन वजूहात को बनजरे इस्तेहसान और कदर शनासी देखा गया।

मौलाना मरहूम के अरसए क्याम कुस्तुन्तुनिया में अक्सर उलमा और मुख्तलिफ मजाक और ख्याल के अहले इल्म वगैरह अस्हाब शाही मेहमान खाने में आते थे। मुख्तलिफ मजहबी मसाइल पर तब्सरा और तबादलाऐ ख्याल होता था युरोप की तालीम और नई रोशनी का असर यहाँ तक पहुँच चुका था इसलिये हजरत मौलाना मरहूम ने जरूरत का एहसास करते हुये बेसत व नबुव्वत और हशर, नशर नुजूले वही वगैरह उमूर को अक्ली दलाइल से साबित किया और "तन्बीहात" के नाम से इन अमूर पर एक रिसाला लिखा जिस की तालीफ से जमादिउस्सानी 1281 हिजरी में फारिग हुये। यह रिसाला खैरूद्दीन पाशातोन्सी सदरे आजम के हुकुम से तबा हुआ। मिस्र में "इज़हारूलहक" के बाज मतबूआ नुस्खों के हाशिये पर यह रिसाला छपा हुआ है।

कुस्तुन्तुनिया से वापसी के बाद मस्जिद हरम में दर्स व तदरीस का सिलसिला जारी रहा सबसे पहले हजरत मौलाना

मरहूम ने माकूल से तलबा को रूशनास कराया और खास तौर पर रियाजी में हेअत की तदरीस शुरू की। जो हजाज़ में तालीमी हैसियत से गैर मारूफ था। इल्मे सर्फ मुस्तकिल तौर पर दाखिले दर्स न था बल्कि नहू के साथ इल्मे सर्फ की इब्तिदाई मालूमात पढाई जाती थी। हजरत मौलाना मरहूम ने सर्फ की तालीम को नहू से अलग किया। इसी के साथ यहां के तरीका–ए–दर्स व तदरीस और मकामी अहम जरूरतों पर काफी गौर के बाद यह राए कायम की कि यहां एक ऐसे दारूलउलूम का सन्गेबुनियाद रखा जाए जो मरकजियत के शायाने शान हो। दुनिया की मुख्तलिफ जुबानें जानने वाले उलमा मुदर्रिस हों और ऐसा निसाबे तालीम राइज किया जाये जो दीनी और दुनियावी जरूरियात का मुतकफिफल हो। अगरचे सलतनते उस्मानिया इन उलमाए हरम और बाकमाल अफराद की हौसला अफजाई में लाखों रूपये बेदरेग सर्फ कर रही थी जो मस्जिदे हरम में दर्स व तदरीस में मशगूल थे मगर उस में जो नकाइस पाये जाते थे वह हस्बे ज़ेल हैं:

1. वह उलमा अपने दर्स व तदरीस को किसी निजाम और काम को ज़ाबते की मातेहती में अन्जाम नहीं दे रहे थे।

2. कोई मखसूस निसाबे तालीम राइज व मुकर्रर न था। और जो कुछ पढ़ाया जाता था वह तलबा में किसी किस्म की काबलियत व इस्तिदाद पैदा नहीं कर सकता था।

3. तरीकाए तालीम निहायत अब्तर हालात में था और सबसे बडा नुक्स यह था कि किताब की इबारत को खुद उस्ताद पढता और खुद ही मतलब ब्यान करता। शागिर्द उसे उस्ताद का एक वाज समझते और अपने दिमाग पर जोर डालने के आदी ना थे। उस्ताद से सवाल करना या नफ़से मस्अले पर ऐतराज पैदा करना मा'यूब समझा जाता था। समझने या तोजीह के लिये इस्तिफ्सार बेअदबी में दाखिल था।

4. जो उलूम पढाए जाते थे। उनमें नहू व फिकह, तफसीर, हदीस पर तमाम उमर खतम होने के बावजूद तक्मील या आला काबलियत पैदा नहीं होती थी। तफसीर जलालेन जो आमतौर पर हिन्दुस्तान में साल भर में पढाई जाती थी उस वक्त सात साल में खत्म हुआ करती थी। बाकी उलूम के पढने, फनून के हासिल करने का रुजहान और शौक ना था और ना तबहहूर और इस्तिेदाद के साथ पढाने की हिम्मत थी।

5. इन मुहाजरीन की औलाद के लिये जो मुमालिक इस्लामिया से हिजरत करके आते हैं किसी किस्म की तालीम तरबियत का कोई

इन्तजाम ना था। उनकी औलाद गैर तरबियत याफ्ता और जिहालत व बदअख्लाकी का शिकार थी। ना वह दुनिया के किसी काम की थी और ना वह दीन के।

6. मक्का मुअज़्ज़मा को सरचश्मा–ए–दीन और मर्कजे इस्लाम ख्याल करके हर साल इस्लामी दुनिया के दूरदराज मकामात से बडी तादाद में मतलाशियाने उलूमे दीनिया इस शौक में आते थे के इस चश्मे से सेराब हों मगर उस जमाने में यहां उन तलबा की तालीम का कोई इन्तजाम था और ना क्याम, तआम और दीगर जरूरियाते तालीम की कोई सूरत थी।

इन तमाम हालात और गिरदोपेश की जरूरतों पर काफी गौर करने के बाद यह पहला शख्स था जिसने अहले हरम और शाईकीने उलूम दीनया की जरूरत का एहसास किया और अपने हकीमाना दिमाग से यह बात पैदा की कि हजरत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रजि0 की मिटी हुई दरस्गाह का जमीने हरम पर एहया किया जाए। मुहाजरीन की औलाद और अहले अरब के बच्चों की तालीम और तरबियत के इन्तिजाम के साथ सन्अत और दस्तकारी सिखाने के लिये एक बाकाइदा सन्अती स्कूल भी आला पैमाने पर कायम किया जाए। ताके अहले हजाज़ और इन मुहाजरीने हरम की औलाद जरूरी और इब्तिदाई तालीम के बाद गदागिरी और इफलास का शिकार होकर नन्गे इस्लाम न बनें।

हजरत मौलाना मरहूम मक्का मुअज्जिमा के हिन्दुस्तानी मुहाजरीन और अहले खैर अस्हाब को इस अहम जरूरत की तरफ मुतवज्जेह फरमाते रहे। इस सिलसिले में मुताअद्दिद इज्तिमाआत हुए और यह ते पाया कि नवाब फैज अहमद खाँ साहब मरहूम रईस जिला अलीगढ़ जो इस जमाने के तब्काए मुहाजरीन में दुनियावी वजाहात के लिहाज़ से मुमताज थे, उनके जाती और मस्कूना मकान के एक हिस्से में मदरसा की इब्तिदा की जाये और मुमताज हिन्दुस्तानी मुहाजरीन की हमदर्दी और अम्ली शिर्कत इस कारे खैर को हासिल रहे। मक्का मुअज्जमा के इस सब से पहले मदरसे की सबसे पहली तारीखी और बुनियादी अपील दर्ज ज़ैल है:

"हम्द और नात के बाद अर्ज यह है कि अक्सर हिन्दियों अहले तोफीक की हिम्मत से हरमैन शरीफैन ज़ादा हुमल्लाहु शर्फन में बाजे बाजे खैर के काम जैसे रूबातें और सबीलें तैयार हो गयी है। पर अब तक कोई मदरसा उनकी तरफ से यहाँ नहीं है। हालाँके और कामों से यह काम भी बडा खैर का काम हैं। इसलिये

यह अर्ज है कि जो इस अमर में शरीक हों वह अपना नाम मा उस रक़म के जो उन्हें माहाना देना मन्जूर हो, लिख दें और थोडे का ख्याल न करें कि थोडा थोडा इकटठा हो के बहुत हो जाता है। और इस मदरसे की तदरीस के और खर्च के कवाइद उन लोगों की राय से मुकर्रर होंगे जो इस अमर के लिये बामश्वरा मुकर्रर किये जाऐंगें। फक्त।

अलमरकूम यकुम माह रमजानुल मुबारक
1290 हिजरी कुदसी।

मुहम्मद हुसैन शेखुल मुतव्विफीन हिन्द, 3 रूपये माहाना
रहमतुल्लाह, 2 रूपये माहाना
मुहम्मद अहसान, 2 रूपये माहाना
इरादत हुसैन, 1 रूपये माहाना
अहमद हसन, 25 रूपये सालाना
जाफ़र हुसैन ताकियाम मक्का से 3 रूपये महाना
मियाँ अब्दुलकरीम, 3 कुर्श माहाना
हाफ़िज अब्दुल्लाह, साढे तीन कुर्श
जैनुल आबिदीन, 20 दीवानी
मुहम्मद फैज अहमद खाँ, 5 रूपये माहाना
मुहम्मद फजलुल्लाह अफी अन्हु, आठ आने माहाना
मुहम्मद जीवन, 1 रूपये, महाना
मियाँ जान, आठ आने, महाना
अब्दुर्रहीम अत्तार ,चार आने, महाना
इनायतुल्लाह, साढे तीन कुर्श, महाना
अब्दुर्रहीम अत्तार,पाव मजीदी, माहाना
अब्दुलवहाब, 2 रूपये माहाना
इस्माईल, 2 कुर्श, माहाना
अब्दुलकादिर शेखुलमुतवफ्फीन बन्गाला, 1 रू0, माहाना
अब्दुल अजीज अफ़ीयुल्लाह अन्हु, 1 रू0, माहाना
अब्दुर्रहमान अत्तार बंगाली, रूबु रबिया,माहाना
जान मुहम्मद मेमन, पाव रियाल,माहाना
हाफिज कादिर बख्श,(ताक्याम मक्का मुअज्जमा)रूबु मजीदी, माहाना
निजाम अली चाए फरोश, रूबु रियाल, माहाना
अमीर अली, चार आने, माहाना
अब्दुलजब्बार नबीरह शाह अब्दुस्सत्तार, 4 कुर्श, माहाना
मुहम्मद अहसनुद्दीन, रूबु रियाल
मुन्शी अजीजुर्रहमान, 3 कुर्श, माहाना

अब्दुलहक कातिब बंगाली, 3 कुर्श, माहाना
अब्दुल्लाह मुजल्लिद, निस्फ रबिया, माहाना
फिदा मुहम्मद, 1 रूपय, माहाना
शैर मुहम्मद खाँ, 4 कुर्श, माहाना
मियाँ कासिम, 3 कुर्श, माहाना
कम्तरीन अली जान अफीयल्लाह अन्हु, रूबु रियाल, माहाना
अब्दुर्रहमान खूरदह फरोश, 2 कुर्श, माहाना
दाऊद मुल्ला कोकनी, रूबु मजीदी, माहाना
कमालुद्दीन, 1 रूपया, माहाना
अब्दुलवहाब, रूबु मजीदी, माहाना
हकीम महबूब अली, आठ आने, माहाना
इब्राहीम अली, आठ आने, माहाना
मौ0 नजीर, 3 कुर्श, माहाना
अब्दुल हमीद, 3 कुर्श, माहाना
हाफिज अब्दुल हकीम मशहूर पहलवान, रूबु रियाल, माहाना
हकीम अब्दुल अजीज, 3 कुर्श, माहाना
फिदवी मुहम्मद आजम, नीम कुर्श, माहाना
अली बख्श समकरी, 3 कुर्श, माहाना
कुदरतुल्लाह, चार आने, माहाना
गाजी चार आने, माहाना
अब्दुल्लाह गुर फरोश, 1 इश्रीन
सय्यद अब्दुल अली, रूबु रियाल, माहाना
महताब बैग, 1 रू0, माहाना
मुन्शी नजमुद्दीन, आठ आने, माहाना
मुहम्मद कामिल मुताव्विफ 1 रू0, माहाना
मुहम्मद इब्राहीम, चार आने , माहाना
अमीर हाजी, चार आने, महाना
अब्दुलकरीम, चार आने , माहाना
हाजी मुहम्मद, 1 रू0, माहाना
अब्दुर्रहमान खय्यात रूबु मजीदी, माहाना
मौलवी खलीलुर्रहमान, चार आने
लाल मुहम्मद सब्बाग, रूबु मजीदी
अब्बास खाँ, रूबु मजीदी
फकीर इमदादुल्लाह चिश्ती, 1 रू0 हत्तुलमकदूर
सय्यद हसन अली ज़मज़मी, 1 रू0

मुहम्मद इस्माईल इब्ने हकीम मुल्ला नवाब, 3 कुर्श
इब्राहीम इब्ने हुसैन मताले, 2 रू0, माहाना
शेख फरीद, चार आने
जोर आवर खाँ, 1 कुर्श
शेख रमजानी मुजेयिन, 3 कुर्श
अब्बास खाँ सबही, साढे तीन कुर्श
हाफिज अब्दुल गफूर खैयात, 4 कुर्श
अब्दुल्लाह इस्माईल सिन्धी, रूबा रियाल
ईसा और हमजा, लिलआ रियाल यक मुश्त
मुसम्मात सकीना, 1 कुर्श माहाना
मीर इमदाद अली कमीसी युल कादिरी, 1 रू0, माहाना
मुल्ला मुहम्मद नवाब, 1 रू0
अब्दुस्समद कुतुबी, चार आने माहवार
जेनब मारफत सकीना, एक कुर्श
वजीरन मारफत सकीना, एक इशरीन
शब्बो मारफत सकीना, एक इशरीन
जियाउद्दीन बंगाली, रूबा मजीदी
जोजा जियाउद्दीन मजकूर, 2 कुर्श
नानी मौलवी मुहम्मद इस्माईल, 3 कुर्श
हाफिज अब्दुल्लाह नाबीना मुदर्रिसे दोयम, 1 कुर्श
हाफिज असदुल्लाह मुतव्विफ, चार आने
अली पन्जाबी, चार आने
काजिम अली खाँ, 2 कुर्श
अब्दुल्ला मस्तान, 2 आने
नूरन बीबी, 2 आने
अली इब्ने अब्दुल्लाह सिंधी, 5 ¾ कुर्श
अहमद बिन अब्दुल खालिक सिंधी, 5 ¾ कुर्श
इब्राहीम बिन कासिम सिंधी, 5 ¾ कुर्श
अब्दुल मौला खैयात सिंधी, 3 कुर्श
हाजी मुकीम बिन अल्ला रक्खा सिंधी, 3 कुर्श
मुहम्मद हुसैन, 6 रू0 सालाना
गामा बिसाती, चार आने
मुहम्मद खलील अहमद खाँ, एक कुर्श
मौलवी अब्दुल खालिक अत्तार बंगाली, रूबु मजीदी
नूर मुहम्मद मुजल्लिद, 3 कुर्श
मौलवी अब्दुस्सलाम, निस्फ रूपया

बीबी शहर बानो, एक रूपया अज यकुम शव्वाल
जोजा जनाब शाह इमदादुल्लाह, 2 कुर्श
मुहम्मद जान, 2 आने जिलहिज्जा से
अब्दुल करीम बंगाली, 2 आने जिलहिज्जा से
हाजी शरीअतुल्लाह, 2 आने जिल हिज्जा से
मुहम्मद नासिर बंगाली, 2 कुर्श यकुम जीकादा से
मुन्शी जफरूल्लाह साहब, 1 रू0
मुन्शी मुमताज अली, 2मुहर्रम से 1 रू0
मुन्शी नवाजिश हुसैन, यकुम मुहर्रम से 5 रू0
मियाँ मुहम्मद अली, 2 कुर्श
मुहम्मद जावा खैयात, रूबु रियाल
मकसूद अली, 3 आने
मौलवी रहमअली, 1 रू0
मुहम्मद उसमान नज्जार, 3 कुर्श
अहमद कन्सार, 1 रू0
मुहम्मद खाँ सब्बाग, 1 रू0

सौलतुन्निसा बेगम

मौसम हज 1290 ई0 में कलकत्ते की एक ऊलुलअजम और मुखैयर खातून सौलतुन्निसा बेगम साहिबा अपनी लडकी और दामाद के साथ हज के लिये आईं। हर नेक दिल और साहिबे इस्तताअत मुसलमान की दिली ख्वाहिश होती है कि वह हरमैन शरीफैन में कोई नेक काम और सदकाए जारीया कायम कर जाये। सौलतुन्निसा साहिबा मरहूमा भी मक्का मुअज्जमा में एक रिबात (मुसाफिर खाना) बनाने का बेहतर जज़्बा अपने साथ लायीं। मौसूफा के दामाद अकसर मसाजिदे हरम में हजरत मौलाना मरहूम के हलकायेदर्स में शरीक होते। मशवरे के तौर पर उन्होंने अपनी खुशदामन के मुबारक इरादे का जिक्र किया। हजरत मौलाना मरहूम ने फरमाया कि "मक्का मुअज्जमा और मदीना मुनव्वरा में रिबातों और मुसाफिर खानों की कमी नहीं सबसे ज्यादा जरूरत एक मदरसे की है। मक्का मुअज्जमा में कोई मुस्तकिल मदरसा नहीं"। सौलतुन्निसा बेगम साहिबा दूसरे दिन हजरत मौलाना मरहूम की खिदमत में हाजिर हुयीं और इस राय को इन्तहाई मुसर्रत के साथ पसन्द करते हुये मदरसे के लिये जमीन वगेरह के मुताल्लिक गुफतगू की। अल्लाह ताअला को यह अजीमुश्शान कारेखैर इस बुलन्द हिम्मत खातून से लेना था। मौहल्ला खन्दरीसा

में जगह खरीदी गयी। और मदरसे की ता'मीर शुरू हो गयी। अक्सर सौलतुन्निसा साहिबा मरहूमा खुद ता'मीर का काम देखने के लिये तशरीफ लातीं और अपनी खुशकिस्मती और इस तोफीके खिदमत पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करतीं। मदरसे के सबसे पहले रजिस्टर की इब्तदाई इबारत जो हजरत मौलाना मरहूम के कलम मुबारक की है नकल जैल है:

''हम्द और नअत के बाद यह है कि अगरचे मदरसा हिन्दीया हजरात अहले हिन्द की हिम्मत और तवज्जह से मक्का मुअज्जमा अदामल्लाहु शर्रफहा में सन 1290 रमजान के महीने में कायम हुआ था। पर असबाब चन्द दर चन्द से जो इस सन के चार महीनों में कई तरह के हरज पेश आये, सो इस लिहाज से हम उन चार महीनों को नजर से गिरा के इस मदरसे के कियाम को मुहर्रमुलहराम बारह सौ इक्यानवे (1291) गिनते हैं। और सब अमूर मुतअल्लिका इस मदरसा को इसी साल से लेते हैं। अल्लाह खैर से इन अमूर को अनजाम दीज्यो। बिमन्नही व करमिही।

12 शाबान सन 1291 हि0 रोज चहार शंबा (बुध) में मदरसा सौलतिया जदीदा में सब मदरसों और तालिबइल्मों को लाया गया। यकुम शाबान सन 1292 हि0 से नवाब महमूद अली खाँ बहादुर वाली छतारी ने सौ रूपये माहवार इस मदरसे के मुकर्रर कर दिये ''।

अजल से इल्म इलाही मे यह सआदत और फखर इस बेवा खातून के हिस्सा में था इस लिये हजरत मौलाना मरहूम ने इन के इस ईसार की बेहतर यादगार के तौर पर मरकजे इस्लाम के इस अव्वलीन इल्मी बिना का नाम

''मदरसा सौलतिया''

रखा जो कयामत तक इस के नाम को इज्जत और सच्ची नामवरी के साथ ज़िन्दा रखेगा।

हजरत बानीये मदरसा सौलतिया को इब्तिदा में अलावा उन मुश्किलात के जो इस किस्म के कामों में हर एक काम करने वाले को पेश आती हैं, दो नये अमर सद्दे राह हुये जिनका वहम और गुमान भी हजरत बानीये मदरसा को ना था:

1. अंग्रेजी कोन्सिल मुतअय्यिना जद्दाह को यह ख्याल और वहम परेशान करता रहा कि हजरत मौलाना मरहूम इस दर्सगाह के पसेपर्दा अंग्रेजो के खिलाफ परोपेगण्डा और कोई बागयाना साजिश ना करते हों। इसलिये कि हजरत मौलाना मरहूम पर 1857 ई0 के इन्कलाब में गैर वफादारी का इल्जाम लगाया गया था। इस वजह

से मदरसे के क्याम में उसने हर मुमकिन रुकावट पैदा करने में दरेग़ न किया।

2. हज्जाज़ के मकामी तुर्क हुक्काम को यह अन्देशा दामनगीर रहा कि जमीने हरम पर मदरसे की इब्तिदा हिन्दुस्तान के मुसलमानों की कोशिश से हो रही है। ऐसा न हो कि यह दर्सगाह आईन्दा बेरूनी इक्तिदार और अगयार की मुदाखलत का किसी वक्त में ज़र्या बन जाये। इस में शक नहीं कि तुर्कों की बदगुमानी एक हद तक दुरूस्त थी क्योंकि वह अपने मुल्क में मिशन और पादरीयों के खैराती और रिफाहे आम के कामों का तल्ख तजुर्बा उठा चुके थे। बावजूद इन तमाम मुश्किलात और जबरदस्त मुखालफत के बानिये मदरसे के हिम्मत और पामर्दी को हाथ से ना दिया और उनका मुकाबला किया।

ताजीरे जुर्मे इश्क है बे सर्फा मोहतसिब
बढता है और जोके गुनह याँ सजा के बाद

कुछ जमाने के बाद हकीकते हाल और असलियत की रोशनी में तमाम शक और शुब्हात के बादल छट गये और मौलाना मरहूम ने खुलूस व ल्लिाहियत और इस्तिकलाल की बदौलत आईन्दा के लिये रास्ता साफ कर लिया।

मदरसे के अगराज व मकासिद

सतूरे बाला से मालूम हो चुका है। कि आज से अस्सी साल कब्ल मक्का मुअज्जमा की तालीमी हालत और दर्स और तदरीस की रफ़्तार किस कदर महदूद थी। हजरत मौलाना मरहूम ने अपनी खुदादाद दूर अन्देशी और हस्सास दिल और दिमाग से मदरसे के क्याम के बाद जो लायेअह अमल मुरत्तब फरमाया इस में इन तीन अहम अगराज को मक्सदे अव्वलीन बताया है:

1. इस्लामी दुनिया से मक्का मुअज्जमा में हर साल शाइकीने उलूमे दीनिया की एक जमात इस जज्बे और वलवले के साथ आती है कि इस्लाम के दीनी मर्कज में तालीम हासिल करे और इस्लामी तेहजीब और मुआशरत का गेहरा मुतालआ करने का करीब से मौका मिले। इन आफाकी तलबा की तालीम और क्याम व तआम का एहतमाम और हत्तुल इमकान उन की जरूरीयात का लिहाज़ रखना मदरसे का अहम फर्ज है।

2. मुहाजरीने हरम की औलाद की तालीम व तर्बियत का इन्तजाम करना ताके आवारागर्दी जिहालत और बद अख्लाकी के शिकार ना हों और तालीम और तर्बियत के साथ उन को शरीफ पेशे सिखाए

जाएं ताके गदागरी और फिक्र और तन्गदस्ती की मुसीबत से उनको निजात मिले और खुदा के घर में दूसरों के दस्तनगर ना रहें।

3. हिन्दुस्तान (क़दीम) में कुरआन पाक की सही किराअत की इशाअत और इस ऐतराज को उठाना कि हिन्दुस्तानी हुफ्फाज कलामुल्लह को गलत पढते हैं। मिस्र और हजाज़ वगैरह मुमालिके इस्लामिया के कुर्रा और हुफ्फाज की हिन्दुस्तानियों पर यह नुक्ता चीनी बेजा नहीं। इस के इजाले के लिये हर मुमकिन कोशिश करना।

मदरसा सौलतिया का मसलक

अगराज व मकासिद के साथ हजरत बानीये मदरसा रहमतुल्लाह अलैहे ने अपनी ईमानी फ्रासत और गिर्द व पेश के तमाम हालात का गहरा मुतालआ करने के बाद इस इरफानी मरकज के लिये कुछ जरूरी और अहम हिदायात मुरत्तब फरमाईं। इन में बिलखुसूस इन तीन उमूर पर ज्यादा इसरार के साथ पाबन्दी की ताकीद फरमाई।

1. कतई तौर पर सियासियात और सियासी दिलचस्पियों से हर कारकुन व मुदर्रिस और तालिबेइल्म को बे ताल्लुक रहना जरूरी है।

2. इख्तलाफी अमूर और मुख्तलिफ फी मसाईल से कुल्ली तौर पर ऐहतराज किया जाये।

3. तफरीक और गिरोह बन्दी से हर तरह बचना चाहिए।

हजरत मौलाना मरहूम ने जिस हिक्मत और बालिग नज़री से इन अमूर की पाबन्दी को लाज़मी करार दिया और इनको मदरसे का मुस्तकिल मसलक मुअय्यन फ़रमाया। हालात ने यह साबित कर दिया है कि हजरत बानीए मदरसा रहमतुल्लाह अलैहे को यकीनन खुदादाद बसीरत हासिल थी। पचास साल पहले हजरत मौलाना मौहम्मद अली साहब मरहूम बानी " दारूल उलूम नदवतुल उलमा" मदरसा सौलतिया की इस खुसूसियत के सिलसिले में तहरीर फरमाते हैं:

" मदरसे की खुशनसीबी और मौलाना मरहूम की नेक नीयती का एक उम्दा समरह यह है कि इसके तमाम मुदर्रिसीन और तलबा इस वक्त की आफतों से अलैहदा हैं। इनके ख्यालात में ना इफरात और तफरीत है और ना जिदाल और निजा का इन्हें शौक है और न किसी मुसलमान की तकफीर और तफसीक का इन्हें ख्याल है। अलहम्दुलिल्लाह इस नाजुक और पुर फितना वक्त

में इस बला से बचना ही खुदा का बडा फज्ल है। वह इस मदरसे पर है''।

कुस्तुनतुनिया का दूसरा सफर

1299 हिजरी में उस्मान नूरी पाशा दौलते उस्मानिया की तरफ से गवर्नर मुकर्रर किये गये मोसूफ चूँकि फौजी आदमी थे इसलिये हिक्मत अमली और दूर अन्देशी उनमें ना थी। बाज खुदगर्ज और फितना अंगेज लोगों की रेशादुवानी से वह मदरसा सौलतिया से बदजन हुऐ और इसे अजनबी मुल्क की एक तेहरीक समझकर मुखालफत पर आमादा हो गये। हजरत मौलाना मरहूम से ताल्लुकात की कशीदगी ने मामले को कुस्तुनतुनिया तक पहुँचा दिया और तरफैन के मारूजात सुलतान अब्दुल हमीद खान की बारगाह में पेश हुऐ। यह हजरत मौलाना मरहूम के दूसरे सफर कुस्तुनतुनिया की कुदरती तमहीद थी। उसमान नूरी पाशा के इरादों और हालात के बर अक्स कुस्तुन्तुनिया से हजरत मौलाना मरहूम की तलबी का हुक्म पहँचा। इस सफर के इब्तिदाई हालात खुद हजरत मौलाना मरहूम की नविश्ता तेहरीर से दर्ज ज़ेल हैं:

''20 रबीउलअव्वल 1301 हिजरी हफ्ता के दिन मग्रिब के वक्त मक्का मुअज्जिमा से जद्दे को रवााना हुए। आठवीं के आगबूट में चलने की तजवीज मौकूफ रही फिर बावूर (जहाज) मिस्री में 15 रबीउलस्सानी 1301 हिजरी रोज बुद्ध को सवार हुऐ और उसने जुमेरात के रोज सुबह के वक्त लंगर उठाया। पीर की रात के 5 बजे सुईज पहुँचे और सुबह को जो पीर का दिन और 20 रबीउस्सानी की थी बाबूर (जहाज) से उतरे और मुहम्मद अली दीदी साहब के मकान पर उतरे। वहाँ से मंगल के दिन 21 तारीख इस्कन्दरिया को रेल पर गये। 3 बजे इस्कन्दरिया पहुँचे। सादुल्लाह बे के मकान पर उतरे। 29 तारीख रबीउस्सानी जुमेरात के दिन तक वहाँ रहे। फिर आठवें दिन जो बुद्ध का दिन 30 रबीउस्सानी 1301 हि0 की थी। बाबूर(जहाज) मिस्री पर सवार होके रवानाऐ इस्तन्बूल हुए। इजमीर से जो हफ्ते का दिन और तारीख 3 जमादिउलअव्वल की थी तार बर्की जनाब नसीम बे और जनाब शरीफ अब्दुल्लाह और जनाब खैरूद्दीन पाशा के नाम असर के वक्त रवाना किये और जमादिउल अव्वल की पाँचवी तारीख पीर के दिन इस्तन्बूल में पहुँचे इधर जहाज ने लंगर डाला। उसी वक्त फिलफौर मुस्तफा वहबी लेयावर (ए डी सी) और बीन बाशी हजरत सुलतान के, जहाज पर चढे और मिल के कहा कि ''हजरत

सुलतान ने बहुत बहुत सलाम फरमाया है और किश्ती खास अपनी भेजी है, चलिये।'' वहाँ से चलकर सराय (महल) कसरे शाही सुलतानी तक जो बिनाये सुलतान मरहूम अब्दुल मजीद खाँ गाजी की है आये। वहां कश्ती से उतर कर दो घोडों की बग्गी में सवार होकर महल सराय सुलतानी में आये और महल सराय के एक कमरे में उतरे, उस रोज मुलाकात को जनाब कमाल पाशा और जनाब उसमान बे और जनाब अली बे थे और जनाब नसीम बे तीनों कुरनाये (मुशीर) हजरते सुलतानी के हैं और जनाब सैयद अहमद असद मदनी जो मुसाहिब हजरत सुलतान हैं दिन को, और रात को नुसरत पाशा आये अगले दिन मंगल को जनाब उसमान पाशा गाजी आये और बुध को सातवीं तारीख जनाब शेख हमजा जाफिर और जनाब सैयद अहमद असद मदनी आये और जनाब कमालपाशा आये और रात को जनाब अली बे कुरना दर्जा दोयम ने हजरते सुलतानी की तरफ से मिजाज पुर्सी करके कलिमाते अवातिफ शाहाना पहुँचाये। आठवीं तारीख जुमेरात के रोज शेख मुहम्मद जाफिर साहब तशरीफ लाये और जुमे को जनाब हसनी पाशा दामाद सुलतान अब्दुल मजीद मरहूम और जनाब सिफवत पाशा और जनाब इस्माईल हक्की और जनाब सैयद फजल पाशा आये और उसी दिन मग्रिब के वक्त खलअत सुलतानी मेरे और बदरूलइस्लाम (हजरत मौलाना मरहूम के भतीजे) और मोलवी हजरत नूर (सदर मुदर्रिस मदरसा सोलतिया) के लिये आया। और हफते के दिन दसवीं तारीख जनाब दरवेश पाशा और जनाब शरीफ अब्दुल्लाह पाशा और जनाब सैयद अहमद असअद और जनाब इसहाक आफिनदी और जनाब नाजिरे औकाफ(वजीर औकाफ) तशरीफ लाये और असर के वक्त निशान (तमगा) मजीदी दर्जा चहारूम का हजरत सुलतान की तरफ से आया। और बारहवी तारीख इतवार के दिन रजा पाशा बाश कातिब (चीफ सेक्रेट्री सुलतान) मगरिब के बाद आये और बारहवीं तारीख पीर के दिन मगरिब के बाद बहुक्म सुलतानी जनाब शेखुलइस्लाम अहमद असद उरयानी जादा की मुलाकात को जाना हुआ। बहुत ताजीम से पेश आये और फरमाया कि हजरत सुलतान ने फरमा भेजा है कि अच्छी ताजीम कीज्यो कि अब तक ऐसा मेहमान अजीज मेरे पास नहीं आया है। सो उस के मुवाफिक मुझे जरूरी है कि ताजीम करूँ और 13 तारीख मंगल के दिन ''सनदे रऊस'' मेहक्माऐ शेखुल इस्लाम से हासिल हुई। 15 तारीख जुमेरात के दिन मकान अलैहदा में आये। असर के वक्त 17 तारीख हफ्ते के

दिन वहबी बे ने हजरत सुलतान की तरफ से हुक्म पहुँचाया कि ''मर्जीऐ हजरत सुलतानी यह है कि तुम अपने अहलो अयाल को बुलवालो। मौसम रबी करीब आ पहुँचा। अब अर्से तक आबो हवाऐ इस्तन्बूल बहुत अच्छी रहेगी''। नर्मी से इस अम्र में उज़्र किया गया। पीर के दिन दूसरी तारीख रजब के 1301 हिजरी हजरत सुलतानी की जेब खास से पांच हजार कुर्श साग़ माहवार मुकर्रर हुये। (तकरीबन दो हजार पाँच सो रूपया माहाना) और 10 हजार कुर्श साग़(तकरीबन पाँच हजार रूपये) अता फरमाये। मंगल के दिन किसये मिफताह काबा और एक तस्बीह अकीकुलबहर की और एक तस्बीह संगे मक्सूद की भिजवाई गई और फरमाया कि ''इसके शुक्रिये में मैंने तुमको ''रुत्बाए पायहे हरमैन शरीफैन'' का अता किया। इसका लिबास भी पहुँचेगा। और छटी तारीख रजब जुमेरात के दिन को असर के बाद सराये सुलतानी (महल) को जाना हुआ। मग़रिब के बाद मुलाकात हुई। गायते इनायते शाहाना से पेश आये। मसनद से उठ के एक दो कदम बढ कर हाथ मेरा कुव्वत से अपने हाथ में पकड कर फरमाया कि ''कस्रते शगल के सबब अब तक मुलाकात नहीं की थी और ताखीर का सबब इसके सिवा दूसरा अमर नहीं''। फिर हम बैठ गये। जब में उठा और सामने आया(तुर्की आदाबे शाही के मुताबिक) फिर दुबारा कमाल खुशी से उठ के मेरा हांथ अपने हाथ में पकड के कहा कि '' तुम्हारा हाल सुनने का मैं मुश्ताक था। इसी लिये मैंने तुम को बुलाया है। और फुर्सत में मैं और मुलाकात अच्छी तरह करूँगा और कुछ देर तक बातें करूँगा।'' दोनों बार मैंनें भी दुआ और कलमाते शुक्रिया मुनासिस्बा कहे। 11 रजब 1301 हिजरी को हजरत मौलवी नूर रवानाए मक्का मुअज्जमा हुऐ और 12 रजब रोज पन्जशंबा को फरमाने सुलतानी '' पायाए हरमैन शरीफैन'' के अता की बाबत हजरत सुलतान ने भिजवाया और 14 रजब रोज शन्बा को शेखुल इस्लाम की मुलाकात को गया। मिस्ल अव्वल के ताजीम व मुहब्बत से पेश आये।''

इस्नाऐ क्यामे कुस्तुनतुनिया में मुतअद्दिद बार हजरत मौलाना मरहूम को सुलतान ने सर्फे बारयाबी बख्शा और मुख्तलिफ मसाईल और मामलात पर गुफतगू होती थी। सुलतान ने मदरसा सौलतिया के लिये माकूल माहाना इम्दाद मुकर्रर करने के मुताल्लिक ख्याल जाहिर फरमाया जिस के जवाब में शुक्रिया और दुआ के बाद हजरत मौलाना मरहूम ने सुलतान की खिदमत में

अर्ज किया कि:

"हरमैन शरीफैन में अमीरूलमोमिनीन के बहुत से जारी करदा अमूर खैर हैं और बहुत से नेक काम तश्नऐ तकमील, मदरसाऐ सोलतिया चूँकि हिन्दुस्तान (हिन्द और पाकिस्तान) के दीनदार और नेक ख्याल मुसलमानों की इमदाद से चल रहा है और काइम है। उनको इस कारे खैर में शिर्कत व सरपरस्ती की सआदत से मरहूम न फरमाया जाये जो यकीनन अमीरूलमोमीनीन के इल्ताफे शाहाना से बईद नहीं।"

एक मुलाक़ात में मौलाना बदरूल इस्लाम साहब (हजरत मौलाना मरहूम के भतीजे) भी साथ थे। उनके लिये सुलतान ने हुक्म फरमाया कि यह मेरे पास रहेंगे और कुतुब खाना हमीदिया (सुलतान अब्दुल हमीद खाँ का शाही दारूल कुतुब जो दुनिया के खास कुतुब खानों में शुमार होता था और जिसमें सलातीने आले उसमान की तमाम क़िताबों को जमा किया गया है) कस्रे यलदिज का उन को मोहतमिम बनाता हूँ। हजरत मौलाना मरहूम ने इस कद्र अफ़जाई का शुक्रिया अदा किया। और मौलाना बदरूल इस्लाम साहब इस खास इल्मी खिदमत पर मामूर हुये। आखिर वक्त तक सुलतान के मौतमद अलैह रहे। मुहासरा-ए-कस्रे यलदिज और सुलतान अब्दुल हमीद की माजूली के पुरखतर वक्त में सिर्फ तीन अशखास सुलतान की खिदमत में बाकी रहे जिन में मौलाना बदरूल इस्लाम भी थे।

सुलतान से अलविदाई मुलाकात के बाद दूसरे दिन मुस्तफा वहबी बे यावर और खैरूद्दीन पाशा और नसीम बे और सैयद अहमद असअद मदनी यह चारों असहाब तशरीफ लाये और सुलतान की तरफ से ज़ाती हदया एक मुरस्सा तलवार हजरत मौलाना मरहूम को दी और सुलतान के यह अलफाज नकल किये कि

"हथयार हर मुजाहिद फी सबीलिल्लाह की जीनत है"।

कुस्तुनतुनिया से हजरत मौलाना मरहूम मक्का मुअज्जमा पहुँचे मदरसा सौलतिया के लिये यह मुसर्रत और खुशी का दिन था। यह अमर खास तौर पर काबिले जिक्र है कि इसतकबाल करने वालों में हजाज के गवर्नर "उसमान नूरी पाशा" भी थे जो सबसे पहले हजरत मौलाना मरहूम से बगलगीर हुये और अपनी गलत फहमी की मुआफी चाही।

नहर जुबैदा

मलिका बगदाद खलीफा हारून रशीद की बीवी जुबैदा

खातून का दायमी सदकाये जारिया नहरे जुबैदा इमतदादे जमाना से बहुत ज्यादा काबिले मरम्मत और इस्लाह थी। और पानी के लिये साकिनाने हरम को काफी दिक्क्त और जहमत पेश आती थी। इसी जमाने में सेठ अब्दुल वाहिद साहब उर्फ ''वाहिदना सेठ'' मक्का मुअज्जमा आये और इस सिलसिले में एक मशावरती इज्तिमा मदरसा सौलतिया में मुनअकिद हुआ। सेठ अब्दुल वाहिद साहब बा तोफीक साहिबे हिम्मत दोलतमन्द थे। हजरत मौलाना मरहूम ने नहर जुबैदा की अज़सरे नौ इस्लाह और मरम्मत का बीडा उठाया और इसके लिये हकुमत की इजाजत और हालात के लिहाज से एक मुस्तकिल मजलिस कायम की गयी जिस में मुहाजरीन मक्का मुअज्जमा के हर तब्के में से हर कौम के मुमताज अफराद मजलिस में मेम्बर बनाये गये। उस मजलिस की सदारत के लिये हजरत मौलाना मरहूम को मुन्तखब किया गया मगर आपने अपने शागिर्दे रशीद ''फजीलत मआब मौलाना शेख अब्दुर्रहमान सिराज साहब मरहूम मुफती अहनाफ और शेखुलउलमा मक्का मुअज्जमा''को इसके लिये मोजूँ समझा। और खुद नायब सदर की हैसियत से इस अजीमुश्शान काम की जिम्मेदारी उठायी। सेठ अब्दुलवाहिद साहब नहर जुबैदा के खजांची और तहवीलदार मुकर्रर हुये। खुदा का शुक्र व अहसान है कि यक सदकाये जारिया उन बुजर्गों की हिम्मत से दोबारा जिन्दा हुआ।

कुस्तुनतुनिया का तीसरा सफर

दूसरे सफर से वापसी के बाद दीगर मशागिल व मसरूफियात के साथ खैरूद्दीन पाशा अली बे और शेखुल इस्लाम वगैरह मुकर्रबीने सुलतान और आयाने दौलत से हजरत मौलाना मरहूम की खत और किताबत का सिलसिला रहा। और अकसर बराहे रास्त सुलताने मुअज्जम को भी बाज अहम उमूर के मुतआल्लिक खुतूत तहरीर फरमाते रहे। किब्रसिनी और कसरते मशागिल के सबब आप को जोफ़े बसर की शिकायत होगयी और 1303 हिजरी में हजरत मौलाना मरहूम नजूलूलमा (मोत्याबन्द) की वजह से लिखने पढने से मजबूर हो गये। सुलतान को इस की इत्तला हुयी तो आप ने फौरन हजरत मौलाना मरहूम को कुस्तुनतुनिया तलब किया। इस हालत में यह तवील सफर आप के लिये नाक़ाबिले बर्दाशत था मगर सुलतान के हकुम से आप ने अज्मे सफर किया। रफका में मोलवी अब्दुल्लाह साहब उर्फ अब्दुल्लाह जी शगिर्द और खादिम हज़रत मौलाना मरहूम ने इस

सफर के जो इब्तदाई हालात कलमबन्द किये वह दर्जज़ैल हैं:

''पोर्ट सईद में रोज शंबा 27 शाबान सन 1304 हि0 इस्तम्बूल को दो तार रवाना किये एक बनाम मियाँ बदरूल इस्लाम साहब के और एक बनाम अली बे के। और इस तार में एक जनी उसमानी अला दो फरंक खर्च हुये और उसी रोज़ शंबा बाद असर आगबोट(जहाज) पोर्ट सईद से रवाना हुआ और चहारशंबे की रात को चाँद रमजाने शरीफ का नजर आया और रोज चहार शंबा पहली रमजान मुबारक बहिसाब हमारी रूयत के सुबह के वक्त तीन बजे 'चनाक किले' में पहुँचे और वहाँ कमन्दार (फौजी अफसरे आला) तमाम किलों चनाक किले का आगबोट पर आया और मौलवी साहब से मिला और कहा कि सराये (महल शाही) से हुकुम आया कि ''मौलवी रहमतुल्लाह साहब चनाक किले में पहुँचे या नहीं इससे इत्तला दो। तो इस बात के वास्ते आप की खिदमत में हाजिर हुआ'' और बाद एक साअत के फिर आगबोट चला और रोज पंजशंबा 2 रमजानुल मुबारक सन 1304 हि0 इस्तम्बूल में पहुँचे और सराये यलदीज (कस्रे यलदिज) में ''चादर कशक'' में उतरे और बाद एक साअत के जनाब सैयद अहमद असअद आफिनदी मदनी तशरीफ लाये और कहा कि ''हजरत सुलतान आपको बुलाते हैं''। थोडी देर के बाद फिर एक आगा (ख्वाजा सरा) आया तो जनाब मौलवी साहब हज़रत सुलतान के पास तशरीफ ले गये। हज़रत सुलतान बडी ताज़ीम से पेश आये और बाद दो साअत के फिर जनाब मौलवी साहब रूखसत लेके मकान (चादर कशक) मे तशरीफ लाये। फिर करीब मग़रिब इसी रोज फिर सय्यद अहमद असअद आफिन्दी मदनी तशरीफ लाये और कहा कि ''हज़रत सुलतान बुलाते हैं'' तो मौलवी साहब तशरीफ लेगये और वहीं इफ्तार किया और तरावीह भी वहीं पढी। हज़रत सुलतान ने उस वक्त फरमाया कि आपकी आँखों के इलाज के वास्ते कल में डाक्टरों को जमा करूँगा। फिर वहाँ से मौलवी साहब मकान पर तशरीफ लाये और रोज जुमा बाद असर हजरत सुलतान ने अपने एक साहब के साथ पाँच डाक्टर उम्दा को भेजा। उन्होंने आके मौलवी साहब की आँखों को खूब तहकीक से देखा और कहा '' इन्शाअल्लाह तआला आँखें अच्छी हो जावेंगी पर इलाज दो महीने के बाद करेंगे क्योंकि अब तक पानी आखों में कामिल नहीं उतरा''। और रोज पंजशंबा में हाजी अली बे कुरनाये सानी भी बाद जोहर तशरीफ लाये और उन्होंने मोलवी साहब से मुलाकात करके मौलवी बदरूल इस्लाम से कहा कि मौलवी साहब

के वास्ते कपडे बाजार से ले आवें और जाके कपडे बाज़ार से खरीदे और लेते आये। और रोज़े जुमा नमाजे जुमा जामाए हमीदिया में पढ़ी और रोज संबा 5 रमजान मुबारक के बाद जोहर जनाब अब्दुल्लाह पाशा नजदी वास्ते मुलाकात जनाब मौलवी साहब के आये और रोज दो शंबा 7 रमजान शेख मौहम्मद जाफिर मे अपने बडे बेटे के वास्ते मुलाकात के तशरीफ लाये और बाद उस के ओर चन्द बार हजरत सुलतान ने बुलाया और 15 रमजान रोज सेहशंबा जियारते चादर शरीफ में जाने के वास्ते बग्गी उमदा भेजी और सैयद अहमद असअद आफिन्दी को बसबब जोफे बसर के साथ किया और वहाँ जाये जियारत में इसहाक आफिन्दी और अकसर कुजाते असकर मिले। और 30 रमजान को जनाब सैयद अहमद असअद को हजरत सुलतान ने मौलवी साहब की खैरयत दर्याफ्त करने को भेजा और पहली शव्वाल रोज चहार शंबा को हुई और नमाज ईद की जामे हमीदियां में पढी।''

सुलतान की ख्वाहिश थी कि हजरत मौलाना मरहूम कुस्तुनतुनिया में उनके पास रहें। एक सोहबत में सुलतान ने अपनी इस ख्वाहिश का इज़हार भी किया जिसके जवाब में हजरत मौलाना ने फरमायाः

''अइज्जह और अकारिब को छोड कर तर्के वतन कर के खुदा की पनाह में उस के दरवाजे पर आकर पडा हूँ वही लाज रखने वाला है, आखरी वक्त में अमीरूल मोमिनीन के दरवाजे पर मरूँ तो क्यामत के दिन क्या मुँह दिखाऊँगा''।

हजरत मौलाना मरहूम को क्यामे कुस्तुनतुनिया बहुत गराँ और शाक गुजर रहा था और उमर के इस आखरी दौर के हर लम्हे को वह खुदा के घर में गुजारने के ख्वाहिशमन्द थे। इस जमाने में (सत्तर साल पहले) आप्रेशन एक हैबतनाक चीज थी इस लिये हजरत मौलाना मरहूम शाही अतिब्बा से आँख के आप्रेशन के लिये तैयार ना हुये। सुलतान को आप की अजहद दिलदारी मन्जूर थी इसलिये मर्जी के खिलाफ इसरार नहीं किया और सुलतान से इजाजत लेकर जीकादा में मक्का मुअज्जमा तशरीफ ले आये। 1305 हि0 में एक मकामी मुआलिज से नुजूलल मा् का आप्रेशन मक्का मुअज्जमा में कराया जो अफसोस है कि कामयाब न हुआ।

हजरत मौलाना मरहूम चूँकि लावलद थे इसलिये आपने अपने बडे भाई मौलाना हक़ीम अली अकबर साहब मरहूम के पोते मौलाना मुहम्मद सईद साहब मरहूम को वतन से बुलाया। उनके

वालिद मौलवी मुहम्मद सद्दीक साहब अंबाला में सर रिशतादार थे और मकान के करीब एक मिशन स्कूल था जिसमें मुन्शी निहालुद्दीन साहब फारसी के मुदर्रिस थे। मुन्शी निहालुद्दीन साहब और मौलवी मुहम्मद सद्दीक साहब में दोस्ताना ताअल्लुकात की बिना पर मौलवी मुहम्मद सद्दीक साहब ने अपने लडके को मिशन स्कूल में दाखिल कर दिया था। इसकी इत्तिला जब हजरत मौलाना मरहूम को हुई तो आप ने रन्ज व मलाल का इज़्हार फ़रमाया और सख्ती के साथ लिखा कि "मुहम्मद सईद को मिशन स्कूल से निकालकर फौरन मक्का मुअज्जमा भेज दिया जाये।" चुनाँचे 12 वर्ष की उमर में मक्का मुअज्जमा पहुँचे और हज़रत मौलाना मरहूम ने अपने एहतमाम और निगरानी में उनकी तालीम व तरबियत का नज़्म फरमाया। ज़ोफे बसारत के बाद खुतूत की तहरीर का काम उनके जिम्मे हुआ। दूसरी तरफ हजरत हाजी इम्दादुल्लाह साहब की ख्वाहिश पर बिलउमूम मग़रिब और इशा के दरमियान मौलाना साहब मरहूम हज़रत हाजी साहब के खुतूत वगैरह सुनाने और उनका जवाब लिखने के लिये जाते थे और इस तरह इन दोनों बुजुर्गों ने अपनी खास निगरानी और तर्बियत से मर्कजेइस्लाम की खिदमत के लिये आप को तैयार किया।

इमारते मदरसा

सरजमीने हरम पर हजरत मौलाना मरहूम ने मदरसा सौलतिया की शक्ल में जो दाइमी कारेखैर छोडा इसकी मुतअद्दिद खुसूसियात में यह इमतियाज काबिले ज़िक्र है कि इसके पास अपनी जाती मुतअद्दिद इमारतें हैं और मदरसे के तमाम शोबे इन वसी इमारतों में हैं जो इसी मक्सद के लिये हजरत बानी अलैहिर्रहमा रह0 ने बनाई थीं आपके एहदे मुबारक में मदरसे की अक्सर इमारतें मुकम्मल और तैयार हैं:

1. **मदरसे की सबसे पहली इमारत** : "सौलतिन्निसा बैगम साहिबा मरहूमा" रईसा कलकत्ता की इआनत और माली इमदाद से 1291 हिजरी में तैयार हुई और इस मोहसिन खातून के नाम से इस इमारत को मौसूम किया। इस अव्वलीन वसी(विशाल) इमारत में पाँच बडे कमरे और 3 छोटे कमरे, वसी सहन और दीगर जरूरियात हैं।

2. **मदरसे का दारूलइकामा** (बोर्डिन्ग): दूसरी मुस्तकिल इमारत है जो सूबा बिहार के एक आली हिम्मत रईस मीर वाजिद हुसैन साहब मरहूम रईस पटना की यादगार है। इस इमारत की इब्तिदा 1293 हिजरी में हुई। मदरसे के इस दारूलइकामा में पचास तलबा

के रहने और क्याम की गुन्जाईश है जिसका कोई मुआवज़ा वगैरह किसी से नहीं लिया जाता।

3. **मस्जिदे मदरसा** :. मदरसे की मस्जिद तारीखी हैसियत के अलावा हिन्दुस्तानी तर्ज तामीर का वाहिद नमूना है सहने हरम में जमजम के करीब "सुलतानी कुतुबखाना" की इमारत थी। सहने हरम में इस इमारत की वजह से नमाज के औकात में हुज्जाज को खास तौर पर तक्लीफ और जहमत होती थी। हजाज़ के गवर्नर नूरी पाशा ने वजारते औकाफ़ कुस्तुनतुनिया को इस तरफ तवज्जेह दिलाई कि कुतुब खाने की इमारत अगर सहने हरम से उठा दी जाए तो जाइरीन ओर हुज्जाज की आसानी और सहूलियात का बाईस होगा। यह दरख्वास्त सुलतान अब्दुल हमीद मरहूम के हुजूर में मन्जूर हुई। किताबें और इमारत का तमाम सामान मस्जिदे हरम से एक मुलहिका इमारत में मुन्तकिल किया गया और कुतुबखाने की इमारत गिरा दी गई। मुन्हदिम इमारत का सामान वगैरह के नीलाम का एलान हुआ। इस खबर को सुनकर हजरत मौलाना रहमतुल्लाह साहब रहमतुल्लाह अलै0 बैचेन हुए कि जो पत्थर और सामाने इमारत ज्वार काबा और सहने हरम में रहा हो नीलाम के बाद न मालूम किस जगह पर और किस मकाम पर खरीदने वाले इस्तेमाल करें। हजरत मोलाना मरहूम ने उस्मान नूरी पाशा से अपना ख्याल जाहिर किया कि इस सामान से मदरसा सौलतिया के मुताल्लिक एक मस्जिद बनवा दी जाये जिस की जरूरत भी है। इस तजवीज से हजाज़ के गवर्नर ने इत्तेफाक जाहिर किया। मलबे की कीमत 1500रू0 ते हुई। और यह सहनेहरम से मदरसे में मुन्तकिल हुआ। सन 1301 हिजरी में इस यादगारे जमाने मस्जिद की तामीर शुरू हूई। मक्का मुकर्ररमा के मैमार गुम्बदों के बनाने में महारत नहीं रखते थे। मस्जिद के तीनों गुम्बद पानीपत जिला करनाल के मे'मारों की यादगार हैं जो उस ज़माने में फरीजाए हज अदा करने की गर्ज से मक्का मुअज्जमा आये थे। मस्जिद की इमारत 1304 हिजरी में मुकम्मल हुई। हिरात के ज़ी इल्म और खुश कलम व खुश कलाम मुहाजिर जिनको हजरत मौलाना मरहूम से खुलूस और दिली ताअल्लुक था उन्होंने मस्जिद का मुन्दर्जा ज़ैल कित्आऐ तारीख लिख कर अपने हाथ से महराब की पैशानी पर कन्दा किया:

बसके खुश मन्जर अस्त इँ मस्जिद मारअल ऐन मिस्लुहुस्सानी

गश्त तारीख "खानए रहमत" रहमतुल्लाह कुल अलबानी (1304हि0)

मक्का मुअज्जमा में
हजरत मौलाना मरहूम के तलामिजा

मस्जिदे हरम में हज़रत मौलाना का हलकाये दर्स मरजा खास व अवाम था। मस्जिदे हरम की तदरीस के जमाने में और मदरसा सौलतिया के इब्तिदाई दौर में आपसे जिन असहाब को शर्फे तलम्मुज हासिल हुआ इस तवील फहरिस्त में चन्द मुमताज उलमाये हरम के नाम दर्ज ज़ैल हैं:

1. शरीफ हुसैन बिन अली। साबिक अमीरे मक्का और बानीये हकुमते हाशिमीया
2. शेख अहमद अब्दुल्लाह मर्दाद। शेखुल अइम्मा वल खुतबा मस्जिदे हरम
3. शेख अब्दुर्रहमान सिराज। मुफ्तीये अहनाफ और शेखुल उलमा मक्का मुअज्जमा
4. शेख़ अमीन मुहम्मद मदार्द। नाइब काजीये मक्का मुअज्जमा
5. शेख अब्दुर्रहमान हसन अजीमी
6. शेख अब्दुल्लाहुल गमरी। मुदर्रिस मस्जिदे हरम
7. शेख हसन अब्दुल कादिर तैयब। मुदर्रिस मस्जिद हरम
8. शेख असअद अहमद दहान। काजी मक्का मुअज्जमा
9. शेख अब्दुर्रहमान अहमद दहान। मुदर्रिस मुस्जिदे हरम और सदर मुदर्रिस मदरसा सौलतिया मक्का मुअज्जमा
10. शेख हसन काजिम। मुदर्रिस मस्जिदे हरम
11. मोलवी अब्दुस्सतार साहब देहलवी। मुदर्रिस मस्जिद हरम
12. शेख अब्दुल्लाह अहमद अबुल खैर। काजीये मक्का और मुदर्रिस मस्जिद हरम
13. शेख अब्दुल हमीद बख्श फलकी
14. सैयद हसन दहलान। मुदर्रिस मस्जिदे हरम
15. शेख अब्दुर्रहमान शेबी। कलीद बरदार खाना काबा
16. शेख मुहम्मद हुसैन खैयात। बानीये मदरसा खैरिया मक्का मुअज्जमा
17. आबिद हुसैन मालिकी। मुफ्ती मालिकीया मक्का मुअज्जमा
18. शेख अहमद नज्जार मरहूम। काजीये ताईफ
19. शेख मुहम्मद हामिद मरहूम। काजीये जद्दाह
20. शेख मुहम्मद सईद बा बसील। मुदर्रिस मस्जिद हरम
21. मौलाना बदरूल इस्लाम साहब। मुदर्रिस मदरसा सौलतिया

और मोहतमिम कुतुब खाना हमीदीया कसरे यलदिज कुस्तुनतुनिया
22. शेख अब्दुल्लाह जवावी मरहूम। मुफ्ती शाफईया मक्का मुकरमा
23. शेख हस्बुल्लाह मरहूम। मुदर्रिस मस्जिद हरम
24. शेख मुहम्मद अली जैनुल आबिदीन मरहूम। मुदर्रिस मस्जिद हरम
25. शेख सालेह कमाल मरहूम। मुदर्रिस मस्जिदे हरम
26. शेख मुहम्मद अली कमाल मरहूम। मुदर्रिस बा मक्का मुअज्जमा
27. शेख दरवेश अजीमी मरहूम। मुदर्रिस और मुक्का मुअज्जमा
28. शेख बकर रफी मरहूम। मुदर्रिस मस्जिदे हरम
29. मौलवी नजीर अहमद बंगाली। मुहाजिर मक्का मुअज्जमा
30. मौलवी अब्दुर्रहमान साहब। मुहाजिर मक्का मुअज्जमा
31. मौलवी जियाउद्दीन अब्दुल वहाब साहब मरहूम। मोहतमिम मदरसा बाकिया तुस्सालिहात मद्रास
32. मौलाना कारी अब्दुल्लाह साहब। सदर मुदर्रिस शौबा तज़वीदुल कुरआन मदरसा सौलतिया मक्का मुअज्जमा
33. शेखुल कुर्रा मौलाना कारी अब्दुर्रहमान साहब इलाहाबादी
34. मौलाना अब्दुल्लाह गाजी साहब मरहूम। मुअर्रिख मक्का मुअज्जमा और मोहतमिम कुतुब खाना मदरसा सौलतिया मक्का मुअज्जमा
35. हकीम मुहम्मद इसमाईल नवाब साहब मरहूम। मक्का मुअज्जमा के मशहूर तबीब और आलिम
36. मौलाना मुहम्मद सईद साहब मरहूम। साबिक नाजिम मदरसा सौलतिया मक्का मुअज्जमा
37. मौलाना अब्दुल्लाह सिराज मरहूम। मुफतीये अहनाफ और काजीयुल कज़्ज़ात और वजीर आजम हकूमते हाशिमिया (हजाज)
38. सुलैमान हस्बुल्लाह मरहूम। मुदर्रिस मस्जिदे हरम
39. मौलवी अब्दुल खालिक इस्लामाबादी। बानीय मदरसा इस्लामिया दारूल फाईजीन मक़्का मुअज्जमा
40. शेख मुहम्मद सालेह मैमनी मरहूम। मुअर्रिख मक्का और अज मुकर्रबीन शरीफ ऊन अमीर मक़्का।

हजरत मौलाना मरहूम के अहदे मुबारक के बाद भी आप की इस मरकजी दर्स गाह से अलहमदुलिल्लाह इलमी फैज और दीनी खिदमत का सिलसिला जारी रहा आज से अस्सी साल कबल फन्ने तजवीद और किरआत पर बहुत कम तवज्जेह की जाती थी और इसी लिये यह काबिलेकदर फन बराये नाम था। यह एक मुसल्लमा हकीकत है कि हिन्दुस्तान (पाकिस्तान और

हिन्द) के तूल और अर्ज में जहाँ फन तजवीद का सिलसिला और किरअते सबा का चर्चा दिखाई देता है यकिनन बिलवास्ता या बिलावास्ता वह मदरसा सौलतिया का फैज है। मदरसा सौलतिया के तालीम याफ्ता तलबा जिन्हों ने हिन्दुस्तान (कदीम) में तजवीद और किरात की तरक्की व तालीम में खास हिस्सा लिया उन में खुसूसियत के साथ कुर्राये जैल काबिले जिक्र हैं:

1) मोलवी कारी मुहम्मद सुलेमान साहब मरहूम भोपाल

2) कारी सैयद हसन साहब दुजाना जिला रोहतक

3) कारी अब्दुर्रहमान साहब मरहूम इहयाउल उलूम इलाहाबाद

4) कारी अब्दुल खालिक साहब मदरसा तजवीदुल कुरआन सहारनपुर

5) कारी इब्राहीम रशीद साहब खतीब मक्का मस्जिद हैदराबाद

6) कारी अब्दुल वहीद खाँ साहब मरहूम दारूल उलूम देवबन्द

7) कारी अब्दुल मालिक साहब मदरसा फुरकानिया लखनऊ

8) कारी फैज आलम साहब। गोलडा, रावलपिण्डी

9) कारी महमूद यार साहब भोपाल

10) कारी मुतीउल्लाह साहब मुलतान

11) कारी मीरान शाह साहब मरहूम मुअल्लिम ए तजवीद दारूल उलूम नदवा लखनऊ

12) मौलाना कारी जियाउद्दीन मोहतमिम मदरसा बाकियातुस्सालिहात मद्रास

13) कारी हमीदुद्दीन साहब बानीये मदरसा तजवीद संभल जिला मुरादाबाद

14) मोलवी कारी सैयद मुतर्जा हुसैनी साहब बम्बई

इन मशाहीर कुर्रा के अलावा "रहमतुल्लाह" के इस फैज आम से जो अजीमुश्शान और इल्मी फवाइद हासिल हुये उन के अस्सी साला मुफस्सल तजकरे की इन महदूद सफहात में गुन्जाईश नहीं मगर "दारूल उलूम हरम सौलतिया" के अबनाये कदीम की इस मुख्तसर फैहरिस्त में इजमाल की तफसील मौजूद है वल हम्दुलिल्लाह।

1) शेख अहमद इब्ने अब्दुल्लाह कारी मरहूम। मुदर्रिस मदरसा सौलतिया, काजीए मक्का और मुदर्रिस मस्जिद हराम मेम्बर मजलिस शूरा मम्लकत सऊदिया

2) शेख अब्दुल हमीद हदीदी। हाल काजीए मक्का और मेम्बर मजलिस ए औकाफ आला

3) शेख हुसैन अब्दुल गनी मरहूम। मुदर्रिस मदरसा सोलतिया, मेम्बर हाइकोर्ट और मुदर्रिस मस्जिदे हरम
4) यहया अमान। साबिक मुदर्रिस मदरसा फलाह, मस्जिद हरम, काजीए मक्का और मेम्बर हाईकोर्ट और हाल काजीए ताइफ
5) शेख मुहम्मद नूर कत्बी। हाल काज़ी मदीना मुनव्वरा और मुदर्रिस मस्जिदे हरम
6) शेख अहमद नाज़रीन। मरहूम मदरसा सौलतिया, मदरसा फलाह और नाइब काजी ए मक्का मुअज्जमा
7) शेख सालिम सफी। साबिक मुदर्रिस मदरसा सौलतिया, मदरसातुलफलाह और नाइब काजी ए मक्काा मुअज्जमा
8) शेख हामिद कारी। साबिक मुदर्रिस मदरसा सौलतिया, काजी ए ताइफ और हाल काजीए युम्बा
9) शेख हसन सईद यमानी साबिक मुदर्रिस मदरसा सौलतिया, मेम्बर हाइकोर्ट और हाल काजीए कुज्जात रियासत समाटरा
10) शेख अहमद हरसानी। हाल काजीए महकमा ताजीरात दरजा दोम मक्का मुअज्जमा
11) शेख सुलैमान मुराद। मरहूम मुदर्रिस मदरसा सोलतिया और काजीए ताईफ
12) शेख हसन मुहम्मद मुशात। मुदर्रिस मदरसा सोलतिया और हाल नाइब काजी ए मक्का
13) शेख अब्दुल्लाह हद्दादी। मुदर्रिस मदरसा सोलतिया, साबिक काजी ए ताईफ और हाल खाना नशीन
14) शेख सिराज मुहम्मद नूर शाशा। साबिक काजीए तबूक, सब रजिस्ट्रार ताईफ, हाल सदर शोबाये औकाफ नहर जुबैदा और मुदर्रिस मदरसा सौलतिया
15) सय्यद मुहम्मद मरजोकी कतबी मरहूम। साबिक मुदर्रिस मदरसा सौलतिया, बाश कातिब महकमा शरईया और मुफत्तिश महाकिमे शरईया ममलकत सऊदिया
16) शेख ईसा रव्वास मरहूम। साबिक मुदर्रिस मदरसा सौलतिया, मस्जिद हरम और मदरसा फलाह
17) सैयद अहसन अहदल। साबिक मुदर्रिस मदरसा सौलतिया और हाल का़जी ए महकमा ताजीरात
18) शेख अब्बास अब्दुल जब्बार। मुदर्रिस मस्जिद हरम और मुफत्तिशे कुतबे इल्मिया
19) शेख उसमान अहमद बशनाक मरहूम। साबिक मुदर्रिस मदरसा

सौलतिया और मस्जिदे हरम
20) शेख मुहयुद्दीन। करन्शी माहिर इल्मे फलक मक्का मुअज्जमा
21) शेख अहमद इब्राहीम गजावी। शाइरे दरबार जलाल्तुल मुल्क अब्दुल अजीज इबने सऊद, मेम्बर मजलिस ए शूरा ममलकत सऊदिया और सदर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड मक्का मुअज्जमा
22) शेख मुहम्मदुस्सादिक। मुदीर मेहक्मा मरदुम शुमारी ममलकत सऊदिया
23) शेख महमूद कारी। मुदीर कुल्लिया शरीअत मक्का मुअज्जमा
24) शेख महमूद आरिफ। साबिक मुदर्रिस मदरसा सौलतिया, मस्जिदे हरम और हाल मुदीर मदरसा अरबिया रियासत सलानगोर
25) शेख अहमद मन्सूरी। साबिक मुदर्रिस मदरसा सौलतिया और हाल मुदीर "दारूल उलूम जावया" मक्का मुअज्जमा
26) सैय्यद हाशिम नाइबुलहरम मुदीर इदारा मस्जिदे हरम मोहतरम मक्का मुअज्जमा
27) शेख मुहम्मद ईसा ताशकन्दी। वकील अदालत और मेम्बर मयुन्सिपल बोर्ड मक्का मुअज्जमा
28) जमाल सबुंल। सुपरनटिनडेन्ट दफ्तर वजारत खारजा ममलकत सऊदिया
29) सैय्यद मोहसिन मसाबी मरहूम। साबिक मुदर्रिस मदरसा सौलतिया और बानी ए मदरसा दारूल उलूम जावया मक्का मुअज्जमा
30) शेख हामिद मीर। साबिक मुदर्रिस मदरसा सौलतिया और हाल मुदीर मदरसा सानविया ताईफ
31) शेख मुहम्मद अब्दुल करीम सुडानी। मुदीर मदरसा सानविया। मदीना मुनव्वरा
32) शेख दाऊद अब्दुर्रहमान दहान मरहूम। मुदर्रिस मदरसा सौलतिया और मस्जिदे हरम
33) शेख अब्दुल्लाह मगरिबि। साबिक मुदर्रिस मदरसा सौलतिया और बानीए मदरसा इसलामिया फेरा। जावा व मुदीर मदरसा फलाह जद्दा और हाल नाईब काजी ए मक्का मुअज्जमा
34) मोलाना मुहम्मद सलीम साहब। साबिक मुदर्रिस मदरसा सौलतिया, हाल नाजिम मदरसा सौलतिया, मुशरिफ आम (निगरान शरई) "दारूल फाईजीन" और सदर इदाराए हुज्जाज मन्जिल जद्दा
35) शेख मुहम्मद अली इलियास। मुदर्रिस मदरसा सौलतिया व हाल मुदीर शोबा ए इब्तिदाई मदरसा सौलतिया
36) शेख मुख्तार मखदूम मरहूम। मुदर्रिस मदरसा सौलतिया निगरां

शोबा सानवी मदरसा सोलतिया
37) शेख इब्राहीम यूसुफ खाँ। साबिक नाईब काजी ए ताईफ
38) शेख बकर कमाल। साबिक काजीए ताईफ
39) शेख मुहम्मद मदनी मुँजद्ददी। मुदीर शोबा ए ऊर्दू इदारा हज ममलकत सऊदिया
40) शेख ज़किरिया बेला। मुदर्रिस मदरसा सोलतिया, मस्जिद हरम और हाल निगराँ शोबा सान्वी मदरसा सोलतिया
41) शेख अली बकर।मुदर्रिस मदरसा सोलतिया और मस्जिद हरम और बानी ए मदरसा इसलाह
42) शेख मुहम्मद सालेह सलीम। वकील अदालत शरईया मक्का मुअज्जमा
43) शेख मुहम्मद शाह। मददगार इदारा बेतुलमाल महकमा शरईया
44) शेख अब्दुल्लाह आशी। मुदीर जमीअत असआफ (फस्ट ऐड सोसायटी) ममलकतए सऊदिया
45) शेख असअद मुफ्ती। मुदीर दफ्तर शिरकत अर्जिया लिस्सय्यारात – (अरबीन मोटर कम्पनी मलकअते सऊदिया) मदीना मुनव्वरा
46) सैय्यद मुहम्मद इब्राहीम फूलानी। मुसन्निफ व अदीब
47) सय्यद सईद उबई यमानी। अज उलमाये यमन
48) सय्यद मुहम्मद हिजाम यमानी। मुदर्रिस शहर सन्आ (यमन)
49) शेख अनअम नासिर यमानी। मुदर्रिस मदरसा फलाह मक्का मुअज्जमा
50) शेख मुहम्मद अबुबक्र मुल्ला। मुदर्रिस मदरसा अजसा (नजद)
51) शेख अब्दुर्रहमान मुल्ला मुदर्रिस मदरसा अजसा (नजद)
52) शेख अब्दुल्लाह अलकोहजी। साबिक मुदर्रिस मदरसा सौलतिया व हाल वाईज़ व खतीब बहरैन
53) शेख अब्दुल्लाह फिदा मरहूम। मुदर्रिस मदरसा सौलतिया व मोहतमिम कुतबखाना मस्जिदे हरम मक्का मुअज्जमा
54) शेख मुहम्मद अली यमानी। मुदर्रिस मस्जिदे हरम, हाल मुअल्लिम और अतालीके बाज शाहजादगान
55) शेख अब्दुर्रहमान मज़हर। शेखुल मोअल्लिमीन (पाकिस्तान और हिन्द) मक्का मुअज्जमा
56) मौलाना अब्दुल वहाब साहब देलहवी। मालिक फर्म हाजी अब्दुस्सत्तार, अब्दुल जब्बार साहेबान (शााख कोठी हाजी अलीजान साहब मरहूम दिल्ली) और मेम्बर मजलिसे कुतुब खाना हरम

57) हाफिज अब्दुलबारी साहब देलहवी। मैनेजर फर्म हाजी अब्दुस्सत्तार और अब्दुल जब्बार साहेबान ताजिराने मक्का मुअज्जमा

58) हाफिज मुहम्मद इनाम साहब देहलवी। ताजिर मक्का मुअज्जमा

59) हाफिज मुहम्मद रफी साहब देलहवी। ताजिर मक्का मुअज्जमा और वकील रियासत हैदराबाद दक्कन

60) शेख उमर अकबर। नाइब शेखुल मुअलिमीन (पाकिस्तान और हिन्द) मक्का मुअज्जमा

61) सय्यद हाशिम अली नहहास।नाइब मुदीर और एडीटर रिसाला ''मॅन्हुल'' मक्का मुअज्जमा और शोबा तहरीरात वजारत मालिया मक्का मुअज्जमा

62) शेख अब्दुल खालिक रफ़ा। हाल ताजिर जद्दा

63) हाफिज जियाउद्दीन अहमद साहब मरहूम। साबिक मोतमिदे अमूमी सदर दफ्तर दारूल उलूम हरम सोलतिया करांची।

64) शेख इमरान रशादी। साबिक चार्ज डीएफेयर इण्डोनेशिया लगीशन जद्दा।

65) सय्यद बक्र जवावी। साबिक सैक्रेट्री मजलिसे मियोनिसपल बोर्ड मक्का मुअज्जमा और हाल मुदीर शोबाए सन्अत

66) शेख अब्दुल कादिर इलियास। मुदर्रिस मदरसा सौलतिया और हाल मुदर्रिस मदरसाए अजीजिया मक्का मुअज्जमा

67) शेख अब्दुल फत्ताह रावह। मुदर्रिस मदरसा फैसल्या मक्का मुअज्जमा

68) शेख अब्दुल कादिर करामातुल्लाह। मुदर्रिस मदरसा सौलतिया और हाल मुदीर मदरसाए राबिग

69) शेख हसन सिद्दीक। सिन्धी मुदर्रिस मदरसा सौलतिया और हाल मुदर्रिस मदरसा सऊदिया

70) शेख मुहम्मद महमूद नदीम। इन्सपेक्टर रोडस आरगनाईजेशन डिपार्टमेन्ट ममलकते सऊदिया।

71) शेख शमसुद्दीन इण्डोनेशी। साबिक मुदर्रिस मदरसा सौलतिया व हाल मुदर्रिस मदसये उमराऐ ताईफ

72) शेख महमूद जोहदी। मुदर्रिस मदरसा सौलतिया और हाल काजीयुल कुज्जात रियासत सलामगोर

73) शेख अली अब्दुल्लाह बल्लू। मदारिस महकमा तालीम मक्का मुअज्जमा

74) शेख अहमद हसन मुशात ताजिर मक्का मुअज्जमा

75) मौलवी महबूबर्रहमान कैरानवी। साबिक उस्ताज दारूल उलूम नदवातुलउलमा लखनऊ, हाल उस्ताज अदब मदरसा आलिया कलकत्ता
76) शेख खलील अब्दुर्रहमान। मुदर्रिस मदरसा सौलतिया हाल मुदर्रिस गोवरमिंट स्कूल रियाज़(नजद)
77) शेख मुहम्मद अली मलावी। मुदर्रिस मदरसा सौलतिया और हाल इदारा काकी मोटर वर्कशाप मक्का मुअज्जमा
78) शेख मुहम्मद सईद अबुल खैर मरहूम। साबिक मुदीर औकाफ ममलकत सऊदिया
79) शेख मुहम्मद अली इब्ने तुर्की। साबिक मेम्बर मजलिसे शरई और हाल मुदर्रिस मस्जिद नबवी मदीना मुनव्वरा
80) शेख अब्दुस्समद फिदा। ताजिरे कुतुब मक्का मुअज्जमा
81) हकीम मुहम्मद नईम साहब। तबीब सौलतिया दारूशिशफा और मुन्तज़िम शौबा ऊर्दू रेडियों स्टेशन ममलकत सऊदिया
82) शेख जुबैर अहमद। मुदर्रिस मदरसा सौलतिया, मोहतमिम मदरसा दारूल उलूम जाविया और हाल मोहतमिम मदरसा अरबिया फलफलाँ इण्डोनेशिया
83) शेख राज उसमान। मुफ्ती ए शहर कल्लान जावा
84) शेख अब्दुल मजीद। मोहतिमिम मदरसा इस्लामिया जम्बी जावा
85) शेख हसन यहया। मोहतमिम मदरसा नूरूल ईमान जावा
86) शेख कमास अब्दुस्समद। बानीए मदरसा नूरूलईमान जावा
87) शेख मुहम्मद अली मन्सूर। सदर मुदररिस मदरसा इदरिसिया फेरा
88) शेख अबू बकर कमरीन। मुदर्रिस मदरसा इस्लामिया, फलम्बान
89) मुहम्मद मरजूक़ी, मुफतीये फलम्बान
90) क़ारी अलाउददीन, बानीये मदरसा तजवीद कवाला फेरा,जावा
91) शेख ज़ेनुददीन अमीनान। बानी "मदारिस जात नहज़तुल वतनुददीनयतुल इस्लामिया" जावा
92) शेख अब्दुल गनी मवारी। नायब काजी और बानीय मदरसा अरबिया मवार ,जावा
93) शेख अब्दुर रशीद मुहम्मद तैयब। मौहतमिम मदरसा फौलू, जावा
94) शेख मेहमूद मैदान। बानीये मदरसा मुस्तफवीया कदह
95) शेख अब्दुल हलीम। खतीब मौहतमिम मदरसा मुस्तफवीया

कदह

96) शेख ताजुददीन सबकी। मुदररिस मदरसा इस्लामिया, समाटरा

97) शेख अब्दुस्समद सालेह। मौहतमिम मदरसा अरबिया, पीनांग

98) शेख खलील अब्दुल जब्बार। साबिक चीफ एकाउटेंट, वजारतए मालिया, ममलकत सऊदिया

99) शेख अब्बास कत्तान मरहूम। साबिक चेयर मेन मक्का मौअज्जमा

100) शेख सुलैमान जुनैदी। मजलिसे इलमी इण्डोनेशिया

वफात हसरते आयात

इस्लाम और मुसलमानों की दीनी और इल्मी हर मुमकिन खिदमत के बाद इस मुजाहिद फी सबीलिल्लाह ने 75 साल की उमर में जुमे के रोज़ 22 रमजान उल मुबारक 1308 हि0 में दाईये अजल को लब्बैक कहा और इस्लाम का यह सच्चा खादिम अपनी तमन्ना और आरज़ू के मुताबिक पैवन्दे ज़मीने हरम मौहतरम हुआ। जन्नतुल मौअल्लात में हज़रत खदीजतुल कुबरा रजीअल्लाह अनहा के जवार और सद्दीकीन और शुहदा के जुमरे में मदफून हुए।

रहमतुल्लाह अला रेहमतिल्लाह

इस छोटे से अहाते में सिर्फ पाँच कबरें हैं जिनमें अकसर व बेशतर इसी तबके के खासाने खुदा, आलमे आखिरत में एक दूसरे के साथ हैं। मेहज़ तारीखी मालूमात के लिए इन बुज़र्गों के नाम दरज जैल हैं:

1.हजरत मौलाना रहमतुल्लाह साहब, 2.हजरत हाजी इमदादुल्लाह साहब 3.नवाब अब्दुल अली खाँ साहब रईस छतारी ज़िला बुलन्द शहर 4.शमसुल उलमा मौलाना मुहम्मद हुसैन साहब इलाहबादी के वालिद 5.मौलाना अब्दुल हक साहब शैखुद दलायल मुसन्निफ, ''इकलील शरह मदारिकल तनज़ील'' 6.मौलवी अजीज बख्श साहब मरहूम बदाँयूनी. 7.मौलाना हजरत नूर साहब, सदर मुदर्रिस मदरसा सौलतिया 8.मौलवी अब्दुल्लाह गाजी साहब साबिक मौहतमिम कुतुब खाना मदरसा सौलतिया व शागिर्द हजरत मौलाना मरहूम 9. शेख अब्दुल हकीम साहब साबिक खजाँची मदरसा। रेहमतुल्ला अलैहिम अजमईन।

कता–ए–तारीख वफात

फखरुल उलमा हज़रत मौलाना मुहम्मद रहमतुल्लाह साहब कैरानवी नूरूल्लाहू मरकदहू ,बानीये मदरसा सौलतिया मक्का मौअज्ज़मा ज़ादहल्लाहू शरफन। अज़ मौलवी अहमदुददीन साहब मुतवत्तन चकवाल, ज़िला जेहलुम तिलमीज़ हज़रत मौलाना मरहूम:

आह ज़ीं हीने मसाईब इकतराँ
मजम-ए-अन्दोह व रंजे बेकराँ
गश्त सब्र अज़ खातिरे गमदीदा गुम
हस्त कौले मसनवी शाहिद बराँ
बिशनू अजने चूँ हिकायत मीकुनद
काईं ने खामा अस्त दिल रा तर्जुमाँ
वज़ जुदाईहा शिकायत मीकुनद
बाज़बाने तेज़ व चश्म खूँ फशाँ
कज नेस्ताँ तामरा बबुरीदा अन्द
सख़्त हैरानम बदस्ते ईं व आँ
दर फिराक़न मर्द व ज़न नालीदा अन्द
गिरिया अम शौरे दमद दर हाजिराँ
सीना खाहम शरहा शरहा अज फिराक़
गर कुनम रंजे निहानी राअयाँ
ताबुगोयम जिकरे दर्दे इश्तियाक़
ज़इन्तक़ाले किबला-ए-अहले दिलाँ
हजरत मखादूमना इल्मुल हुदा
फैज बख्श नाकसाँ व नाकिसाँ
फखारे अहलुल हिन्द फी मुल्किल अरब
बलके दर इस्लामबूल अज़वये निशाँ
दर ईराक़ व हिन्द व मिस्र व शाम व रूम
दर फजाईल गश्ता मुमताज़-ए-ज़माँ
काशतिहारश शमस फी निसफिन नहार
फी बसीतिल अर्ज़ बिल लुतफिल अयाँ
ज़ैरे ईं गुम्बद हजार अहले कमाल
मुशातहर गश्तन्द अम्माने चुनाँ
मातमश यकनेस्त बल सद मातम अस्त
जुल्मते आमद अयाँ अन्दर जहाँ
फोते आलिमे मौते आलम गुफता अन्द
सैयिमा आनाँ कि न आयद मिशले शाँ

1308 हिजरी

बूद दर दुनिया चिरागे दीन व दिल

1308 हिजरी

ताके शेख मुल्के हरमैन गश्त आँ
रोज जुमा बिस्त व दवुम अज़ माहे सोम

1308 हिजरी

रफ्त सूऐ बागे शाह यानी जनाँ
1308 हिजरी
गर्क बादा दर सुयूले फेजे हक
1308 हिजरी
दाम बिल अफज़ाल फी कहफिल अमाँ
चूँके अल्ताफे जनाब आमद बयाद
आँ ज़माँ बर दिल रसद जखमे गराँ
ज़ार मीनालम ज़हाले ज़ार खोश
चूँ नदानम चाराए अन्दोहे जाँ
लाजुर्म चूँ नेस्त दरमाँ गैर सब्र
मी नुमायम बर दुआ खात्मे बयाँ
रहमतुल्लाही अला अस्लाफिही
नेअमतुल्लाह बाद दर अख़लाफ़े शाँ
गौ ग़रीबुल वतन तारीखे विसाल
रहमतुल्लाह लदै खौरूल जनाँ
1308 हिजरी

....

मदरसा सौलतिया की हाजीयों के लिये सहूलतें

डाकः अपने खुतूत मक्क़ा मोअज़्ज़मा में मदरसा सौलतिया के ज़र्ये मंगा सकते हैं। पता है: Madrasa Saulatiya,Post Box No. 114, Mecca, Saudi Arabia, (K.S.A.),
Fax & Phone No. : 00966--2--5425105

अमानतः मक्क़ा पहूँचने के बाद रक़म मदरसे के शोबाये अमानत में जमा करायें और जब जितनी ज़रूरत हो हासिल करें।

क्यामः हज की सालाना छुट्टियों में मदरसे की तमाम इमारतें खाली रहती हैं जो कि हरम शरीफ के करीब हैं में माकूल मुआवजे के साथ क्याम का इन्तिजाम होता है।

तिब्बी सहूलियात का माकूल इन्तिज़ाम

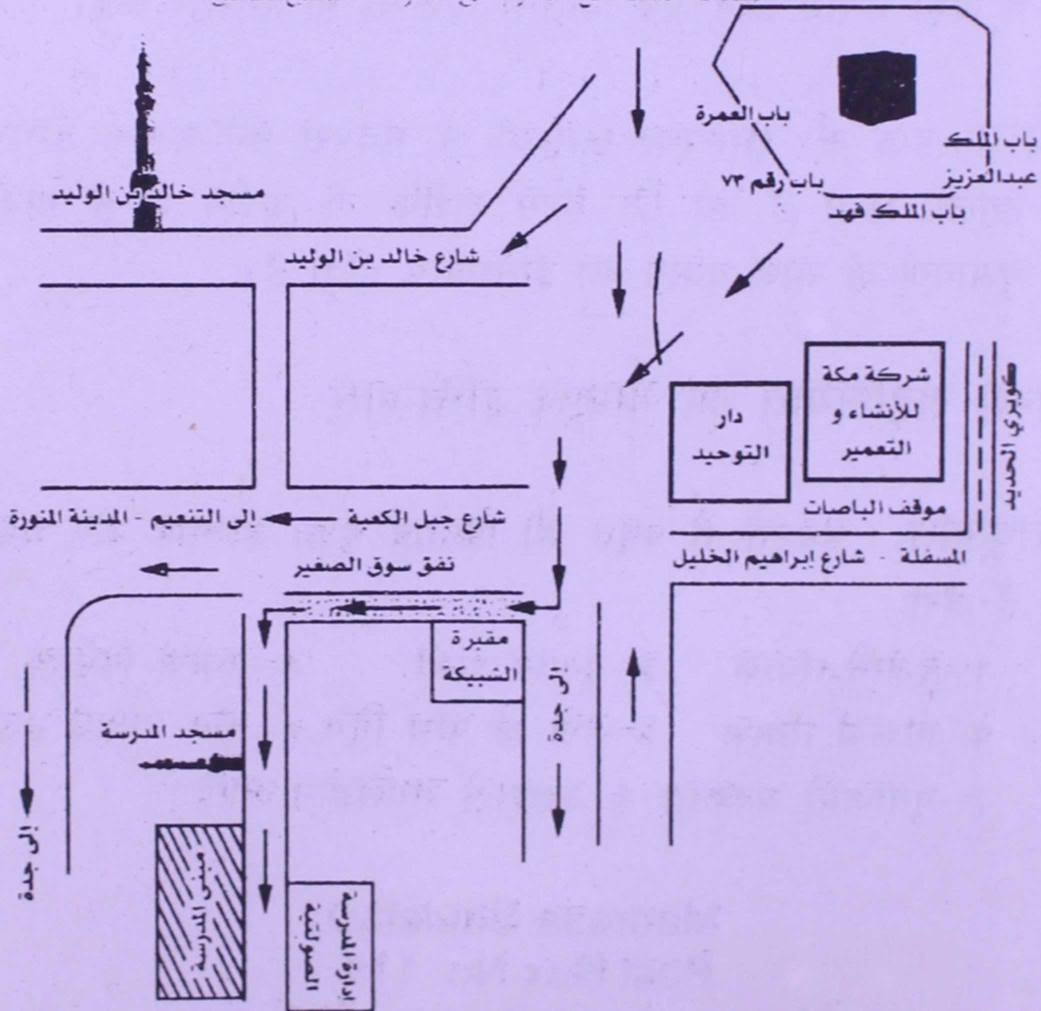
मतबूआत : मदरसे से बहुत सी किताबें मुफ़्त हासिल कर सकते हैं जैसेः

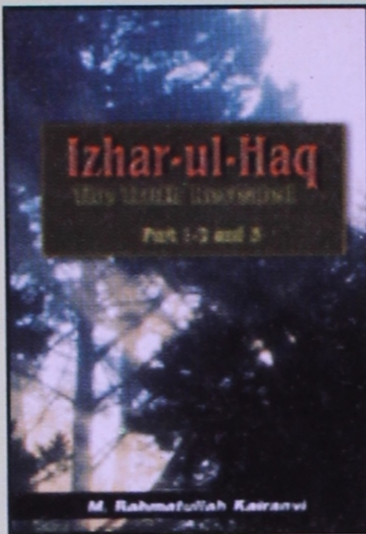
1–दुआये तवाफ 2–दुआये सअी 3–तवाफे विदाअ
4–मारूजे तवाफ 5–हज के पाँच दिन 6–मीम नामाऐ हज
7–मुनाजाते अरफात 8–अक़्वाले सालिहीन आदि।

Madrasa Saulatiya,
Post Box No. 114,
Mecca, Saudi Arabia, (K.S.A.)
Arabic website: www.alsawlatiyah.com
email: alsawlatiyah@hotmail.com
Fax & Phone No. : 00966--2--5425105

मदरसा सौलतिया पहुँचने का रास्ता

बाबुल उमरा, हार्रतुल बाब में ''ज़काकुल सौलतिया (सौलतिया स्ट्रीट) का बोर्ड ''जबले काबा रोड'' पर लगा है





Izhar-ul-haq

English Translation of: Izhar -ul- Haq The Truth Revealed Parts 1-2 and 3 By M Rahmatullah Kairanvi Paperback 474 Pages Ref: 139 ti Price: £9.95 Originally written in Arabic under the Title Izhar ul Haq by the distinguished 19th century Indian Scholar Maulana Rahmatullah Kairanvi and appeared in 1864. Well before the now famous Muslim-Christian Debates by Ahmad Deedat of South Africa Maulana Rahmatullah was challenging the Christian offensive against Islam in British India. In a debate which took place in January 1854, in Akbarabad in the City of Agra. The Rev C C P Founder (who had written a book in Urdu to cast doubts into the minds of the Muslim) admitted that there were alterations in the Bible in seven or Eight places to which the Maulana commented "If any alteration is proved to have been perpetrated in a particular text, it is considered null and void and invalidated. This and other debates proving Islam to be the true religion was part of the trigger which lead to the Brutal British aggression against the Muslims of India in 1857 in which thousands of Ulemah were killed, Maulana Rahmatullah was at the top of the list, but Allah saved him and took him to Makkah where he established The M

£ 9.95,
480 pages Paperback A5
Kg 0.50 [+ Add to Shopping Cart]
ISBN 1 842000 46 2

CONTACT:
1, Wynne Road,London,
SW9 0BB,England
Telephone + 44 207 737 7266
(Monday to Friday between 10am and 4pm GMT) Fax: + 44 207 737 7267
www.taha.co.uk
E-mail sales@taha.co.uk



इजहारूल हक:

खलीफतुल मुस्लिमीन सुलतान अब्दुल अजीज खाँ और खैरूद्दीन पाशा तूनसी सदर आजम की तहरीक पर पादरी फन्डर से अकबराबाद आगरा में मुनाजिरा की मुफस्सल कैफियत और तमाम मसाइल का निहायत बस्त व शरह के साथ बयान है। 16 रजब सन 1280 हि0 कुस्तुन्तुनिया में इस किताब की तालीफ शुरू की और आखिर जिलहिज्जा सन 1280 हि0 में खत्म हुयी और 1281 हि0 में सब से पहले कुस्तुन्तुनिया में छपी। सदर आजम मौसूफ के हुकम से एक तुर्क आलिम ने अरबी से तुर्की में इस का तर्जुमा किया और "इबराजुल हक" के नाम से मुकम्मल तुर्की तर्जुमा शाय हुआ। नीज यूरोप की मुतअद्दिद जबानों में हकुमत उसमानिया की तरफ से इस के तर्जुमे शाए किये गये पादरियों ने खास अहतमाम व कोशिश से तलफ किया। मिस्र में मुतअद्दिद बार तबा हो चुकी है। "बाईबिल से कुरआन तक नाम से ऊर्दू में भी छप चुकी है। मौलवी गुलाम मुहम्मद साहब बहांजारांदेरी ने बडी महनत व जानकाही से गुजराती में तर्जुमा किया जो शाए हो चुका है। इजहारूल हक के अंग्रेजी तर्जुमा की इशाअत के बाद "टाईम्स ऑफ लन्दन" ने उस पर तबसरा करते हुये लिखा था कि "लोग अगर इस किताब को पढ़ते रहेंगे तो दुनिया में मजहब ईसवी की तरक्की बन्द हो जायेगी"। नवाब हाजी इस्माईल खाँ साहब मरहूम रईस दतावली जिला अलीगढ़ ने मक्का मुअज्जमा में हजरत मौलाना मरहूम को टाईम्स का यह तराशा और इजहारूल हक के मुतआल्लिक उस का मजकूरा बाला रिवियू खास तौर पर दिया था। रद्देनसारा में सिर्फ यही एक किताब एसी है जिस का जवाब या रद्द आज तक मसीही दुनिया न देसकी।



Rs. 84/-

Farid Book Depot(pvt) Ltd.
2158,M.P. Street, Patuadi House,
Darya Ganj, New Delhi - 110 002
(India)email: farid@ndf.vsnl.net.in
Ph 23289786, Fax: 23279998